प्रकाशक—
गङ्गाप्रसाद भोतीका एम० ए०,
बी० एल०, काव्यतीर्थ
मालिक—
हिन्दी पुस्तक भवन
नं० १८१, हरिसन रोड,
कलकत्ता ।



मुद्रक—
रामकुमार भुवालका,
"हनुमान प्रेस"
नं० ३, माधोकृष्टो सेठ लेन,
कलकत्ता ।

निवेदन

अभीतक इस भवनकी ओरसे राजनीतिक और धार्मिक पुस्तकें ही प्रकाशित हुई थीं। आज यह भवन एक नवीन वस्तु लेकर पाठकोंके सन्मुख उपस्थित होता है। हिन्दी साहित्यमें नाटकोंका विशेषकर स्टेजपर खेलने योग्य नाटकोंका प्रायः अभावसा ही है। अधिकांश नाटक तो पारसी कम्पनियोंके ढंगपर बने हैं। इनकी न तो भाषा ही शुद्ध हिन्दी है और न छन्द ही हिन्दीके हैं। आज कल ऐसे ऐसे नाटक खेले जाते है जो पिता-पुत्र साथ बैठकर नहीं देख सकते। अतः ऐसे नाटकोंसे समाज सुधारकी आशा करना निराशामात्र है। इसी अभावको दूर करनेके लिये यह 'मधुरमिलन' प्रकाशित किया जाता है। इसके रचयिता हिन्दी साहित्य संसारके सुपरिचित द्वादश हिन्दी साहित्य सम्मेलनके सभापति पं० जगन्नाथप्रसादजी चतुर्वेदी हैं और यह स्टेजपर खेलनेके उद्देश्यसे ही लिखा गया है। इसमें चतुर चित्रकार चतुर्वेदीजीने वर्तमान समाजका चित्र बड़ी सुन्दरतासे चित्रित किया है। वर्तमान समाजमें ऐसी कोई कुरीति न होगी जो लेखककी लेखनीसे बच गयी हो। आशा है जिस उद्देश्यसे इसकी रचना हुई है वह इससे कुछ न कुछ अवश्य सफलीभूत होगा।

एकादश हिन्दी साहित्य सम्मेलनके प्रतिनिधियोके मनो-

रञ्जनार्थ यह खेला भी गया था और स्वयं रचयिताने रोअक्कड़की भूमिका ली थी जिसे देख सम्मेलनके सभापति बाबू भगवान-दासजी और प्रधान मन्त्री पुरुषोत्तमदासजी टण्डनने कहा था "चतुर्वेदीजीने रो रोकर लोगोंको हंसाया।" रानीगञ्जके बाबू जगन्नाथ झुनझुनूवाले इतने प्रसन्न हुए कि उन्होंने चतुर्वेदीजीको स्वर्णपदक प्रदान किया। जबलपुरके सेठ गोविन्ददासने भी स्कूल-वाले दृश्यसे प्रसन्न होकर दस लड़कोंको एक एक रजत पदक देनेका वचन दिया है। इसी तरह और भी अभिनेताओंको पदक मिले थे।

आशा है नाटकके प्रेमी इसे पसन्द कर हमारा उत्साह बढ़ावेगे।

विनीत

प्रकाशक

वाङ्मुख ।

संवत् १६७७ मे हिन्दी साहित्य सम्मेलनका एकादश अधिवेशन जब कलकत्ते मे हुआ था तब स्थानीय अपर इंडिया एसोसियेशनकी नाट्य-समितिके उत्साही सदस्योने सम्मेलनके प्रतिनिधियोके मनोरञ्जनार्थ कोई समयोपयुक्त नाटक लिख देनेका अनुरोध मुझसे किया था। समय स्वल्प था तोभी मैंने उनके अनुरोधको रक्षा की और उन लोगोने भी थोड़े ही समयमें अभ्यास कर इसे खेल डाला।

इसमें सन्देह नहीं कि नाटक लिखनेका यह मेरा प्रथम प्रयास है। इसमे सफलता हुई या विफलता मैं नही जानता, पर इतना अवश्य जानता हूं कि सम्मेलनके सभापति काशीनिवासी प्रसिद्ध दार्शनिक, देशभक्त विद्वान् श्रीयुत बाबू भगवानदासजी एम० ए० तथा प्रतिनिधि गण अभिनय देखकर परम प्रसन्न हुए थे।

यह भी कह देना अनुचित न होगा कि हिन्दू समाज विशेष कर मारवाड़ी समाज और देशकी उस समयकी परिस्थितिको ध्यानमें रखकर ही इसकी रचना की गयी थी। काम चलानेके लिये उस समय इसका नाम 'समाज' रख लिया गया था। अब यह अपने नवीन नामसे प्रकाशित होता है। एक बात और है। वह यह कि नाटक दृश्य काव्य है। इसलिये इसके गुण दोषोका विवेचन अभिनय देखकर ही सम्यक् प्रकारसे हो सकता है अन्यथा नहीं।

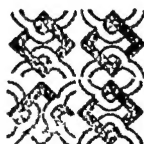
मेरा विचार इसे छपवानेका न था परन्तु धन्यवाद है हिन्दी पुस्तक भवनके अध्यक्षोंको जो इसे साग्रह छापकर प्रकाशित कर रहे हैं।

मैं अपने मित्र पं० नारायणप्रसादजी बेताबका भी कृतज्ञ हूं क्योंकि आपने इसकी कोर कसर निकालकर रंग मंचपर खेलनेके योग्य इसे बना दिया है।

विनीत—

९० सीताराम घोष स्ट्रीट
कलकत्ता,
गङ्गादसहरा सं० १९८०वि०

जगन्नाथप्रसाद चतुर्वेदी



* श्रीः *

पात्र परिचय ।



पुरुष ।

देवीदयाल—शिक्षित ब्राह्मण युवक

मदन—देवीदयालका पुत्र

बुद्धूमल—वृद्ध धनी सेठ

हीरालाल, मोतीलाल, पन्नालाल — बुद्धूमलके दोस्त

वसन्तकुमार—सेवासमितिका सभापति और शिक्षित नवयुवक सेठ

लल्लू, कल्लू — वसन्तके साथी

भोलानाथ—सेवासमितिका नायक

सोहन, सोहन, भैरव — स्वयंसेवक

भूरालाल—रसोइया ब्राह्मण

विष्णुदत्त—विद्वान् ब्राह्मण

बैजनाथ—देवीदयालका पड़ोसी किसान

हंसक्कड़, रोअक्कड़, ब्राह्मणगण, बालकगण, मास्टर, साधू, डाकू, मतवाले, स्वयंसेवकगण, भिखारी, बाजेवाले, कविगण, दलाल, बंगाली, पार्सी, नौकर, दर्शकगण, सरजंट, कौन्स्टेब्ल आदि।

नारी।

लक्ष्मी—देवीदयालकी स्त्री
विन्दा—देवीदयालकी बहन
श्यामा—बसन्तकी स्त्री
राधा—श्यामाकी पड़ोसिन बुढ़िया
रुकमिन—भूरालालकी स्त्री
गुलाबदेई—मोतीलालकी स्त्री
गंगा—गुलाबदेईकी बेटी
वृद्ध वेश्या, भिखारिन, स्त्रियां, बालिका बधू आदि।



॥ श्री ॥

मधुर मिलन ।

प्रस्तावना ।

(सूत्रधार और नटी)

(दोहा)

नटी । प्रकृति नटी नट है पुरुष रंगभूमि संसार ।
नाटक नित व्यवहार सब प्रभुही देखनहार ।

(हमीर-रूपक)

दोनो । वन्दौ प्रभु चरना, संकट हरना, अशरन शरना, सुखदाता ।
जगनाटक नायक, दीन सहायक, आश्रय दायक, भयत्राता ॥
हरिका गुनगाया, अद्भुत माया, पार न पाया, विनय करूं ।
शक्ती अब दीजै, भक्ती लीजै, मुक्ती कीजै, चरन धरूं ॥

सूत्र—प्रिये, आज बड़े आनन्दका अवसर है कि हिन्दी-साहित्यसेवियों और अनुरागियोंका समागम यहां हुआ है। इन्हें कौनसा नाटक दिखानेका विचार है?

नटी—प्राणनाथ, यही तो मैं तुमसे पूछा चाहती थी।

सूत्र—पर मैं तो पहले ही पूछ चुका। इसलिये अब तुम्हीं बताओ।

नटी—अच्छी बात है। मैं तो चाहती हूं कि ऐसे नाटकका अभिनय हो जिससे आनन्दका संचार, समाजका सुधार, देशका उपकार, कुरीतियोंका संहार तथा नवीन भावोंका प्रचार हो, जो हास्यरसका आगार और जिसकी भाषा भी सरस सरल, सुन्दर और शुद्ध हो।

सूत्र—भला ऐसा नाटक कोई है भी?

नटी—(कुछ सोचकर) जी हां। अभी बनकर तैयार हुआ है।

सूत्र—उसका नाम क्या है?

नटी—'मधुर मिलन।'

सूत्र—इसका बनानेवाला कौन है?

नटी—"हिन्दीके अभिमानी लेखक" पं० जगन्नाथप्रसाद चातुर्वेदी।

सूत्र—इनका पूरा परिचय बताओ।

नटी—सुनो—

विप्र मथुरिया वंशमें, भई मिश्र सरनाम।
जगन्नाथ परसाद तहं, प्रगटे गुनगन धाम॥

करत हास परिहास सदा बोलत मृदुबानी।
लिखत सरल सुठि शुद्ध ललित भाषा रसखानी॥

व्यंगपूर्ण अरु भावमयी रचनाहू रुचिकर ।

मतवारे ह्वै जात निरखि जेहि मधुप रसिकवर ।

सूत्र—क्या यह वही चतुर्वेदी हैं जिन्हें लोग 'हास्यरसावतार' कहने लगे हैं ?

नटी—जी हां ।

सूत्र—वह नाटक लिखना क्या जाने ?

नटी—शायद न जानते हों पर मुझे तो यह नाटक बहुत पसन्द है ।

सूत्र—तुझे पसन्द है तो मुझे भी पसन्द है ।

नटी—तो अब चलो । समय हो गया ।

सूत्र—चलता हूं पर अपने वीणाविनिन्दित स्वरसे मेरे श्रवणोंको तो सुखी कर दो ।

नटी—जो आज्ञा ।

(गाती है)

(खम्माच, तिताला)

चलो हिन्दी, आपनकी महरानी ।
चन्द सूर तुलसीसे जामें, कवी भये लासानी ॥
दीन मलीन कहत जो जाको हूं सो अति अज्ञानी ।
जा सम काव्य छन्द नहिं देख्यो है दुनियां भर छानी ॥
जाकी होड़ करत नहिं कोऊ भरे अंगरेजिहु पानी ।

आजहु जाकहँ सब जग बोलत गोरे तुरुक जपानी ॥
है भारतकी भाषा निहचय हिन्दी हिन्दुस्थानी।
जगन्नाथ हिन्दी भाषाकौ है सेवक अभिमानी ॥

सूत्र—बलिहारी ! बलिहारी !! अच्छा अब वह गीत भी सुनवा दो जिसकी कल चर्चा चल रही थी।

नटी—जो आज्ञा। भली याद दिलायी। मैं तो बिलकुल ही भूल गयी थी।

(नटी ताली बजाती है और सहेलियां गाती हुई आती हैं।)

(गीत)

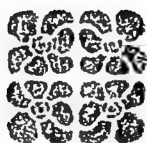
नया काम कुछ करना बाबा नया काम कुछ करना।
दूध दही घृत माखन छोड़ो चर्बीपर चित धरना ॥ बाबा
गोसेवाको दूर भगाओ पालो घोड़े कुत्ते।
भगतिनियोंकी पूजा करके पितरोंको दो जुत्ते ॥ बाबा
वेद शास्त्रका पढ़ना छोड़ो छोड़ो सन्ध्या वन्दन।
ब्राम्हनपनकी धाक जमाओ खूब लगाकर चन्दन ॥ बाबा
कन्याको वर बूढ़ा ढूंढ़ो युवतीको वर छोटा।
खोज खोजकर विधवा व्याहो मारमार कर मोटा ॥ बाबा
दो झूठोंको सच्चा करना खाना नमक हलाली।
"कृषी गोरक्षवाणिज्यं" अब छोडो करो दलाली ॥ बाबा

जो न बने कुछ तुमसे भाई पीटो पकड़ लुगाई।

अथवा नाचो ताकधिनाधिन उसकी पकड़ कलाई॥ बाबा

सूत्र—वाहवा क्या बात है! (सब जाते हैं)

इति प्रस्तावना



॥ श्री ॥

मधुर मिलन.

प्रथम अङ्क

पहला दृश्य ।

(घरका भीतरी हिस्सा)

(लक्ष्मी और विन्दा)

विन्दा—चुप रहो बहू । रोनेसे क्या होगा ?

लक्ष्मी—बीबी जी, मैं जानती हूं रोनेसे कुछ न होगा पर क्या करूं । जी नहीं मानता है तो रो लेती हूं । अब कैसे काम चलेगा ?

विन्दा—कैसे बताऊं ? 'जाही विध राखे राम ताही विध रहिये ।' बहू. घबरानेसे कुछ न होगा, भगवानका भरोसा करो वही भला करेगा । आदमीके किये कुछ नहीं होता ।

लक्ष्मी—बीबी जी, तुम्हारा कहना ठीक है पर पेट नहीं मानता । घरमें एक फूटी कौड़ी भी नहीं । बर्तन वासन थे वह भी एक २ कर घरसे निकल गये । नौकरीकी खोजमें वह रोज जाते हैं पर मिलती नहीं । मैं इसी सोचमें मरी जाती हूं । अब क्या होगा कुछ समझमें नहीं आता ।

विन्दा—"होइ है वही जो राम रचि राखा।" जो कुछ भाग्यमें लिखा है वही होगा। तुम व्यर्थकी चिन्ता कर कञ्चनसी देह क्यों गलाये डालती हो

लक्ष्मी—मेरी देह गलही जायगी तो क्या होगा? बीबीजी, मेरी देह नहीं गलेगी। मेरी मौत नहीं आवेगी। मैं मरही जाऊंगी तो यह सब भोग कौन भोगेगा। तुम मेरी चिन्ता करती हो—तनिक अपने भाईकी तो सूरत देखो। चिन्ताके मारे आधी देह रह गयी है। न पेटको अन्न, न तनको कपड़े। हमारे साथ तुम्हारा भी नसीब फूट गया, सुसराल जातीं सुखसे रहतीं पर व्याहके दिनसे ही नन्दोईजीका पता नहीं। कहां गये, क्या हुआ कुछ मालूम नहीं। हा भगवान, तेरा हमने क्या बिगाड़ा जो इस तरह सता रहा है।

विन्दा—बहू, भगवानको दोष क्यों देती हो! यह हमारे भाग्यका दोष है। किसीके सब दिन एकसे नहीं रहते। धीरज धरो। हमारे दिन भी फिरेंगे। जब सुखके दिन न रहे तो यह भी न रहेंगे। भगवानपर भरोसा करो, वह राईका पर्वत कर सकता है।

लक्ष्मी—बीबी जी, हमारे दिन नहीं फिरेंगे। भगवान हमसे रूठ गया है।

विन्दा—नहीं बहू, ऐसा मत कहो। भगवान बड़ा दयालु है और न्यायी है। वह कभी किसीसे नहीं रूठता है। जो जैसा करता है उसे वह वैसा ही फल देता है। हमने तो कभी

किसीका कुछ नहीं बिगाड़ा । फिर वह हमसे क्यों रूठने लगा। सुख दुःखकी बात तो प्रभुकी लीला है। दिनके बाद रात और रातके बाद दिन होता ही है। अच्छा, एक बात तुम मेरी मान लो। मनमें चाहे जो हो पर भैयाके आगे उदास मत रहो। मर्द सब दुःख झेल सकते है पर स्त्रीका उदास मुंह नही देख सकते। दिन भरके थके मांदे घर आकर स्त्रीका हंसता चेहरा देखकर ही वह लोग सब दुःख भूल जाते हैं। तुम्हें उदास देख भैया भी दुखी होंगे, यह जानती तो हो।

लक्ष्मी—सब जानती हूं पर बीबी जी

बिन्दा—पर वर कुछ नही बहू। जो कहती हू सो करो। भैयाको कितनी चिन्ता है सो वही जानते हैं। हम खाली रोना जानते हैं। पर उपाय कुछ नहीं कर सकते। जो मर्द अपने बाल बच्चोंको नहीं खिला सकता वह जीनेसे मरना अच्छा समझता है। इसलिये बहू, ऐसा करो जिसमें भैयाकी चिन्ता घटे, बढ़े नहीं।

लक्ष्मी—यही तो मैं भी चाहती हू पर अकल काम नही करती। देखो कबके बाहर गये हैं। एक बज गया अभीतक नही आये।

बिन्दा—भैया आज कहां गये हैं?

लक्ष्मी—कहां बताऊं? कचहरीमें कोई काम खाली है वहीं गये हैं। बीबी जी, लोग कहते हैं कि अंगरेजी पढ़नेसे नौकरी तुरत मिल जाती है पर तुम्हारे भैया तो दो पास कर चुके हैं फिर उन्हें क्यो नहीं मिलती है?

बिन्दा—यह नसीबकी बात है! आज कल सिफारिशसे नौकरी मिलती है लिखने पढ़नेसे नहीं। गोपाल क्या पढ़ा है पर अपने बहनोईकी मददसे तुरत नौकर हो गया। अब उसकी आमदनीका क्या ठिकाना है! तलब तनख्वाहके सिवा ऊपर से सैकड़ो रुपये मिलते है।

लक्ष्मी—ऊपरसे कैसे मिलते हैं?

बिन्दा—ऊपरसे ऐसे मिलते हैं कि जो कोई कामकी गरजसे गया वहीं भेंट पूजा चढ़ा आया।

लक्ष्मी—बीबी जी, जब तनख्वाह मिलती ही है तब और लोग क्यों भेंट पूजा चढ़ा आते हैं?

बिन्दा—वह क्या शौकसे चढ़ा आते हैं। लाचार हो चढ़ाते हैं—न चढ़ावें तो हैरान हों और काम बिगड़े?

लक्ष्मी—यह तो बड़ा अन्धेर है! क्या सरकार इसका कुछ उपाय नहीं करती है?

बिन्दा—वह क्यो करने लगी? वह तो जान बूझकर कम तलब देती है। जो हो, जबसे यह नौकरी चली है तबसे ही हाय हाय पड़ी है। पहले लोग बनिज व्यापार, खेती बारी करते थे, मजेमें रहते थे। अब तो अंगरेजी पढ़ पढ़कर नौकरियोंके पीछे लोग दर दर मारे फिरते हैं और पाते नहीं। सरकार भी इतनी नौकरियाँ कहांसे दे? वह पहले गोरोंको देगी या हमको? बाबू जी कहा करते थे कि अंगरेजी पढ़कर जबसे नौकरी करने लगा तबसे घरमें बरकत न रही, चाहे जितना लाओ।

लक्ष्मी—तब फिर अपने भैयाको क्यों नहीं समझातीं कि वह भी वनिज व्यापार करे।

बिन्दा—लिखे पढ़े नौकरी छोड़ दूसरा काम नहीं कर सकते हैं। खैर, भगवानकी जो इच्छा होगी वही होगा। तुम उदास रहकर भैयाको दुखी मत करो—

"धीरज धर्म मित्र अरु नारी। आपतकाल परखिय चारी॥"

तुम्हारी परीक्षाका यही समय है।

लक्ष्मी—बीबीजी, तुम्हें तो बाबूजीने लिखाया पढ़ाया इससे ज्ञानकी बातें करती हो और अपना दुख भूलकर मुझे समझाती हो पर मेरे माँ बापने तो मुझे लिखाया पढाया नहीं, मैं क्या करूं समझमें नहीं आता।

बिन्दा—बस कह दिया भगवानपर भरोसा करो और कुछ मत करो। वही अनाथोंका नाथ हमारी रक्षा करेगा। वह देखो भैया आ गये—

(देवीदयालका प्रवेश और लक्ष्मीका घूंघट ।)

बिन्दा—भैया, बड़ी देर कर दी।

देवी—हाँ हो गयी। और जल्दी ही आकर क्या करता? मेरे जैसा अभागा इस संसारमे कोई न होगा। न मालूम किस पापका फल भोग रहा हूं!

बिन्दा—भैया, इतनी चिन्ता न करो। इससे हानिके सिवा कुछ लाभ नहीं। जो बदा है होगा। बाबूजीका उपदेश भूल गये क्या?

देवी—भूला तो नहीं पर अब भूलना पड़ता है। अब बुद्धि ठिकाने नहीं है। एक एक कर सब चीजें पेटमें चली गयी पर वह खालीका खाली है। उसके भरनेकी रोज जरूरत है। कहाँ जाऊं, क्या करूँ? अब कर्ज भी नही मिलता। जो पहले बड़ी मित्रता दिखाते थे वह मेरी परछांहीसे अब डरते है। देखते ही मुँह फेर लेते हैं। आशा ही आशामें कंगाल हो गया पर नौकरी न मिली। हा! मेरी मदद करनेवाला कोई नहीं—

बिन्दा—नहीं भैया। तुम्हारी मदद करनेवाला वही अनाथोंका नाथ दीनबन्धु दीनानाथ है जो सबका स्वामी और अन्तर्यामी है।　　　　(मदनका प्रवेश)

मदन—बूआजी, भूख लगी। कुछ खानेको दो।

देवी—यह देखकर भी बाबूजीका उपदेश याद रखने कहती हो? हाय, इस भूखे बच्चेको देखकर कलेजा फटा जाता है। इसका जन्म मुझसे अभागेके घरमें क्यों हुआ! अब मैं चोरी करूँगा, डाके डालूँगा और यह दुःख न देखूंगा।

बिन्दा—भैया ऐसी बाते मुंहसे मत निकालो। "जो राखे निज धर्मको तेहि राखे करतार।" भगवानकी याद करो वही "चार भुजावारे सो हमारे रखवारे हैं।"

देवी—नहीं, अब धर्म कर्म और भगवानपर मेरा विश्वास नहीं रहा। अब मैं मनुष्यसे राक्षस हो जाऊंगा अब संसारमें भलेका गुजारा नही।

बिन्दा—भैया, ऐसा मत कहो। इससे पाप होगा।

मदन—बूआजी, बड़ी भूख लगी—

देवी—पाप हो तो हो पर अब नहीं देखा जाता। हद हो गयी। मैं बड़ा अभागा हूं। मुझसे अच्छे कुली मजदूर हैं जो मिहनत मजदूरी कर अपने परिवारका पालन पोषण तो करते हैं मैं भी मिहनत मजूरी करता तो मजेमें रहता। अंगरेजी शिक्षाके फेरमें पड़कर आज मेरी यह दुर्दशा हुई। धिक्कार है इस शिक्षाको। मैं सब तरहसे तबाह हो गया, हाय, इस जीनेसे मरना भला है। अब आत्महत्या करूंगा और अपना मुंह किसीको न दिखाऊंगा।

(जाना चाहता है)

लक्ष्मी—मुझे किनके भरोसे छोड़े जाते हैं। मैं भी साथ चलती हूं।

विन्दा—तुम्हें आज क्या हो गया है भैया? तुम ही इस तरह घबराओगे तो हम क्या करेंगे? परमात्माका ध्यान करो वही दुःख दूर करेगा—

मदन—बाबूजी, तुम मत जाओ। मैं खानेको अब न मांगूंगा।

देवी—कब दुःख दूर करेगा—जब सब भूखो मर जायंगे। परमात्मा मरेको ही मारता है। वह बड़ा अन्यायी ...

(बैजनाथ खानेका सामान लेकर आता है)

बैज—नहीं—वह बड़ा न्यायी है। वह सदा दुखियोंकी पुकार सुनता है और दया करता है।

देवी—कौन! बैजनाथ। यह क्या लाये?

बैज—(सामान रखता है) कुछ नहीं—थोड़ासा प्रसाद है।

देवी—इतनेका क्या होगा ?

बैज—इतना कितना है ? (मदनको मिठाई खिलाता है) महाराजजी, मैं तुम्हारा दास हूं। तुम्हारे टुकड़ोंसे मेरे बाप दादे पले है। मुझे क्यो लजाते हैं। मेरा तन आपके काम आवे तो मैं अपना जनम सफल समझूं।

देवी—बैजनाथ, तुम धन्य हो जो हम भूखोंकी सहायता करने आये हो। यदि वेद शास्त्र सच्चे है तो तुम्हें बड़ा पुण्य होगा ?

विन्दा बैजनाथ, तुम सदा सुखी रहो।

दूसरा दृश्य।



सड़क।

(हसकड़ हसता हुआ आता है और बराबर हस कर बोलता है।)

हंस—हा हा हा हा बस हंसनेसे ही भारतका उद्धार होगा।

(रोअक्कड़ रोता हुआ आता है और बराबर रो कर बोलता है।)

रो—उ हू हू हू बस रोनेसे ही भारतका सुधार होगा।

(दोनो टकराते है ।)

हंस—तू कौन है ?

रो—तू कौन है ?

हंस—मैं हूं हंसकड़ ।

रो—मैं हूं रोअकड़ ।

हंस—तू क्या करता है ?

रो—मैं रोता हूं । और तू क्या करता है ?

हंस—मैं हंसता हूं । अच्छा तू कितनी तरहका रोना रो सकता है ?

रो—बावन तरहका ।

हंस—तो मुझे भी जरा अपना हुनर दिखा ।

रो—रोना तीन प्रकारका है । उत्तम, मध्य और निकृष्ट । उत्तम वह है जिसमें न दांत दिखाई दें और न शब्द सुनाई पड़े जैसे हुक्कामके पास रोना (रोता है)। जिसमें दांत दिखाई दे पर शब्द न हो वह मध्यम जैसे वोटरोंके पास रोना (रोता है)। निकृष्ट वह जिसमें दांत भी दिखाई दें और शब्द भी हो जैसे झाड़ूसे पिटकर रोना (बड़े जोरसे रोता है)। प्रान्तोंके हिसाबसे भी इसके कई भेद हैं, जैसे बङ्गाल, बिहार, मारवाड़ आदिका (रोता है) अवस्था भेद भी है। जैसे पैदा होते लड़के रोते हैं (रोता है) भूख लगनेपर बच्चे रोते हैं (रोता है) मार खानेपर लड़के रोते हैं (रोता है) सुसराल जानेपर लड़कियां रोती हैं। मुर्दनीमें मारवाड़ी और मारवाड़िने रोती हैं (रोता है) इसके

और भी भेद हैं कहांतक बताऊं ? अब तू भी अपना करतब दिखा।

हंस—तू बावन तरहसे रोता है तो मैं हा हा ही ही हु हु आदि बावन दूने साठ तरहकी हंसी हसता हूं। हंसनेमें उत्तम मध्यमका भेद नहीं। यह सदा उत्तम है। दिल खोलकर हंसना ही सच्चा हंसना है बाकी सब रोना है। देख—(कई तरहसे हँसता है)

रो—बस बस रहने दे अपनी हँसी। भला तू हँसकर क्या कर सकता है ?

हँ—तू भला रोकर ही क्या कर सकेगा ?

रो—मैं तो रो रोकर भारतका भला करूँगा।

हँ—और मैं हँस हँसकर हिन्दुस्थानका हित करूँगा।

रो—भला हँसनेसे कभी कुछ हुआ है। जो तू हँसकर हिन्दुस्थानका हित करने चला है ?

हँ—तो रोकर ही कब किसने मैदान मारा है जो रोकर भारतकी भलाई करना तूने विचारा है?

रो—तू रोनेका रहस्य क्या जाने ?

हँ—रोना तुझे ही मुबारक हो। मैं उसका हाल क्यों जानने लगा ? हाँ हँसनेका हाल जरूर जानता हूं। सुन कान खोलकर—

जा असार संसारमें हसना ही है सार।
हसनेसेही होयगा, भारतका उद्धार॥

रो—नहीं

रोनाधोनासार है जाने जगत जहान।
रोनेसे ही होयगा भारतका उत्थान॥

हँ—कभी नहीं। हँसकर मैं सारी दुनियां फांस सकता हूं पर तू रोता जायगा और मरेकी खबर लावेगा।

रो—(रोकर) अबे कुछ खबर भी है। रोगका घर खाँसी और लड़ाईका घर हाँसी। जन्म लेते ही लोग रोते हैं, हँसते नहीं।

हं—लेकिन मरनेके समय पापी रोते और पुण्यात्मा हंसते हैं।

रो—तू हँस पर मैं तो रोऊँगा और भरपेट रोऊँगा क्योंकि रोनेसे ही देशका, समाजका, और अपना कल्याण होगा।

हँ—भला रोनेसे समाजका और देशका कैसे कल्याण होगा?

रो—यह राजनीतिक विषय बड़ा कठिन है। जल्दी तेरी समझमें न आवेगा। खैर तुझपर दयाकर कुछ थोड़ासा भेद बता देता हूं। पर किसीसे कहना मत। सुन "बालानां रोदनम् बलम्" अर्थात् बालकोंका बल रोना है। हमलोग यानी भारतवासी अभी बालक हैं। इसलिये हम भारतवासियोंका बल रोना है। बिना रोये हम कुछ नहीं कर सकते। रोकर ही हम स्वराज्य प्राप्त कर सकते हैं। हँसनेसे हमारी बात हँसीमें उड़ जायगी। फिर बता बुढ़िया क्या खायगी?

हँ—तेरा सिर खायगी और सिर धुन धुन पछतायगी। भला रोता हुआ स्वराज्य लेकर कोई क्या करेगा? भारतको तो हँसता स्वराज्य चाहिये जिससे हँसते खेलते समय बीते। स्वराज्य तो हँसी खेल है पर जरा दिल खोलकर हँसना चाहिये।

रो—अरे हंसा सो फंसा। जान बूझकर जान जोखिममें कौन डाले? यहां तो रोये और 'सर' हुए। 'सर' नहीं तो कौंसिलकी मेम्बरीमें तो शक ही नहीं है। रोयेंगे तो कुछ न कुछ लेही मरेंगे। जो कुछ मिला है या मिलेगा वह रोनेसे ही—

हं—हां हां जान लिया। रोकर गवर्नर भी होगा तो रोता ही रहेगा। रोकर कौंसिलमे जानेसे हँसते खेलते जेल जाना कहीं अच्छा है। रोती जिन्दगीसे हँसती मौत अच्छी।

रो—यह तेरी भूल है।

हं—नहीं तेरी बातें निर्मूल हैं।

रो—संसार तेरे प्रतिकूल है।

हँ—नहीं, मेरे अनुकूल है।

रो—अगर ऐसा है तो चल अदालत। वहीं इसकी सफाई होगी।

हँ—अदालतमें क्या खाक सफाई होगी। वह खुद ही दीवानी है। इसके सिवा मोतीलाल नेहरू और सी० आर० दास भी उससे अलग होगये। अब वहां रखा ही क्या है?

रो—तो देशी पत्रोंके पास चल।

हं—बहुत अच्छा वहीं चल। पत्र कहें बिल्ली तो पत्र बिल्ली।

अपने रामको क्या ? चल अभी चल।

(दोनों हंसते रोते जाते हैं)

तीसरा दृश्य।

बैठक।

[वसन्त और देवीदयालु]

वस—हां तुम तो अपनेको बहुत बड़ा समझते हो न ?

देवी—नहीं। मैं अपनेको क्या किसीको भी बड़ा नहीं समझता। बड़ा तो बस एक परमात्मा है।

वस—उसी बड़े परमात्माने मुझे बड़ा बनाया है। फिर तुम मुझे बड़ा क्यो न समझोगे सोचनेकी बात है।

देवी—सोचनेकी बात तो है पर तुम सोचते नहीं। धनी होनेसे ही कोई बड़ा नहीं हो सकता और न निर्धन होनेसे छोटा। बड़प्पन दिलमे है, धनमे नहीं। "तमंगरीबदिलस्त नबमाल" परमात्माकी दृष्टिमें धनी दरिद्र सब समान हैं। वह किसीको बड़ा छोटा नहीं बनाता है।

वस—तब कौन बनाता है ?

देवी—कर्म्म। जो जैसा कर्म्म करेगा वह वैसा होगा। स्वार्थी, अत्याचारी, निर्लज्ज, छली, कपटी, विश्वासघातक, देशद्रोही कभी बड़ा नहीं हो सकता चाहे वह करोड़पतीही क्यों न

हो । गरीबोंका गला घोटना, अपने भाइयोंको सताना, दूसरोंका नुकसान करना और परायी उन्नतिसे कुढ़ना बड़प्पन नहीं है । जो दूसरोंके दुःखसे दुःखी और सुखसे सुखी होता है, जो दीन दरिद्रोंसे सहानुभूति रखता और आप कष्ट सह अपने भाइयोंको सुखी करता है वही धनहीन होनेपर भी बड़ा आदमी है ।

वस—(रुखाईसे) यह बात नही है । भगवानने बड़े आदमियोंके सुखके लिये ही गरीबोंको बनाया है । इसलिये गरीबोका यह कर्त्तव्य है कि वह बड़े आदमियोकी सेवा करें । जो ऐसा न करेगा उससे भगवान अप्रसन्न हो जायगा क्योंकि हम लोग उसके कृपापात्र हैं । सोचनेकी बात है ।

देवी —जी नही । भगवानका सच्चा कृपापात्र वह है जो दीन दुखीयोंपर दया करता और अपने सुखकी परवा न कर औरोंको सुखी करता है ।

वस—सोचनेकी बात है । मैं यह माननेके लिये तैयार नहीं हूं ।

देवी—यह मैं जानता हूं । यदि आप यह मानने लग जांय तो स्वराज्य मिलनेमे देर ही क्यों हो । खैर, अभी ५०) पचास रुपयेके लिये मैंने कहा था सो दीजिये ।

वसन्त—(रुखाईसे) मैं अब और कुछ न दे सकूंगा । जो दे चुका वही बहुत है ।

देवी—मगर इस समय मुझे बड़ी जरूरत है । मेरे पास एक कौड़ी भी नहीं है ।

वसन्त—नहीं है तो मैं क्या करूं, सोचनेकी बात है। धीरे धीरे पांच सौ दे चुका। व्याज समेत अब १०००) होते हैं। उस सड़ेसे मकानके लिये एक हजार ही बहुत हैं। अब किसपर मांगते हो?

देवी—किसपर बताऊं? जमीन जगह थी वह पहले ही तुम्हें दे चुका। मकान बाकी है सो तुमने रेहन ही करा लिया। अब मेरे पास क्या रक्खा है? अगर अभी पचास न दोगे तो हम भूखों मर जायंगे।

वसन्त—मर जाओगे तो मैं क्या करूं, सोचनेकी बात है।

देवी—सेठजी क्षमा कीजिये। ऐसा रूखा जवाब मत दीजिये मैं लाचार होकर आया हूं। भीख नही मांगता। कर्ज चाहता हूं।

वसन्त—यह आपकी कृपा है। लेकिन मैं अब आपसे लेन देन नहीं कर सकता। हां एक काम करो तो मैं पचास नहीं सौ दे सकता हूं। सोचनेकी बात है।

देवी—जो कहोगे वही करूंगा। अपने प्राण देकर भी तुम्हारा काम करनेको तैयार हूं।

वसन्त—प्राण देनेकी जरूरत नहीं है। अदना सा काम है। तुम चाहो तो सहज ही कर सकते हो। सोचनेकी बात है।

देवी—मैं सोच चुका जल्द कहो।

वसन्त—तुम करोगे कसम खाकर कहते हो?

देवी—बिना सुने कसम तो नही खा सकता पर पेटके कारण इस समय मैं नीचसे नीच काम भी कर सकता हूं।

वसन्त—नीच काम तो तुमसे मैं नहीं ले सकता सोचनेकी बात है। क्योंकि तुम ब्राह्मण हो—पूज्य हो।

देवी—तो कहो क्या करना होगा ?

वसन्त—बैजनाथकी लड़की तुम्हारे घर आती जाती है न ?

देवी—कौन बैजनाथ ?

वसन्त—वही तुम्हारा पड़ोसी। सोचनेकी बात है।

देवी—हाँ वह तो आती जाती है। पर इससे क्या तुम अपना काम बताओ न।

वसन्त—सुना है वह बड़ी सुन्दर है।

देवी—फिर वही फालतू बात। अब अपना काम बताओ। देर न करो।

वसन्त—अच्छा सुनो कहता हूं (इधर उधर देखकर) सोचनेकी बात है। मैं तुम्हें पचास नहीं पाँच सौ दे सकता हूं अगर मुझे उससे मिला—

देवी—(क्रोधकर) नीच, अधम, पापी, यह कहते तेरे ऊपर वज्र क्यो न गिर पड़ा। यह सुननेके पहले मेरे कान क्यो न फूट गये ? तूने मुझे क्या समझा जो ऐसी बात मुंहसे निकाली ? नीच, नराधम, तेरा नाश हो जायगा। मैं नहीं जानता था, तू इतना पतित है। हाय, ऋण कैसा पाप है! अगर तुझसे ऋण न लिया होता तो आज मजा चखा देता।

वसन्त—(बिगड़कर) बस बस होशमे आकर बातेंकर। सोचनेकी बात है। जानता है किससे बोल रहा है ?

देवी—हां जानता हूं व्यभिचारी-पापी दुष्ट से। यदि धर्म है-परमात्मा है और मैं ब्राह्मण हूं तो तू बहुत जल्द इसका फल पावेगा। तुझसे बोलने क्या तेरा मुंह देखनेमे भी पाप है।

(जाता है)

वसन्त—देख तू फल पाता है या मैं! सोचनेकी बात है। भीखमगेको भी इतनी शेखी। पाजी, शैतान, कुत्ते! तेरी इतनी हिम्मत! इसका बदला लेकर छोडूंगा। तेरा सत्यानाश न किया तो मेरा नाम बसन्त नहीं। सोचनेकी बात है।

चौथा दृश्य



(बुद्धूमलकी बैठक।)

(बुद्धूमल, हीरालाल, मोतीलाल, पन्नालाल, वसन्तकुमार, भूरामल बैठे है)

बुद्धू—इन छोरोंने तो अब बहुत ऊधम मचा रखा है। हर बातमें टांग अड़ाते हैं।

हीरा—दिन पर दिन इनकी बदमाशी बढ़ती ही जाती है।

पन्ना—जरासा छापा क्या पढ़ने लगे आफत कर दी।

मोती—छापा तो वसन्ता भी पढ़ता है पर यह तो वैसा नहीं है।

भूरा—यह तो पक्का सनातनी है। वह लोग तो पूरे समाजी हो गये। धमरका भय तो रहा ही नहीं।

बस—मैं तो उन्हे बहुत समझाता हूं पर वह मानते नहीं सोचने की बात है। नित्य नया उपद्रव खड़ा करते हैं।

बुद्धू—सबसे बुरी बात तो यह है कि हम लोगोंको कुछ समझते ही नहीं।

भूरा—अपनी अकलके आगे दूसरों को कुछ गिनते नहीं। ब्राह्मणकी भक्ति तो उनमें है ही नहीं। कहते हैं ब्राह्मणोंको पढ़ना चाहिये। ब्राह्मण तो भगवानके अंग हैं उन्हें पढ़नेसे मतलब?

हीरा—कुछ नहीं।

बुद्धू—अबतक तो इधर उधर ही टांग अड़ाते थे पर अब व्याह शादीमे भी दखल देने लगे।

पन्ना—यह बात बहुत बेजा है। व्याह शादी तो अपनी अपनी मरज़ीकी बात है। इसमें दूसरोंको क्या पड़ी है जो दखल देते हैं।

भूरा—इससे तो मेरी भी हानि है। दो पैसे मिलते थे वह भी बन्द होना चाहते हैं।

मोती—तुझे पैसेको पड़ी है। यहाँ पंचायतकी भी खैर नहीं। उनकी नयी पंचायत बन जायगी तो हमें कौन पूछेगा।

भूरा—दही बन्द हुआ—मावा बन्द हुआ। देखो अभी और क्या क्या बन्द होता है।

बुद्धू—तू दही मावे के लिये मरा जाता है। मेरा बना बनाया खेल ही बिगड़ा जाता है। हीरालालजी! मैंने इसी भूरालालकी मारफत दस हजार देकर दस बरसकी छोरीसे अपना ब्याह ठीक किया है। अब यह सैतान छोरे उसे बिगाडना चाहते हैं। बड़ी मुसकल है। क्या करूं कुछ समझमें नहींआता।

बसन्त—अगर अभी से उपाय न किया जायगा तो पीछे पछताना पड़ेगा और उनका उत्साह भी बहुत बढ़ जायगा। पीछे दबाने में बड़ी कठिनता होगी। सोचनेकी बात है।

बुद्धू—तो तू कुछ उपाय बता। तू तो अंग्रेजी पढ़ा हुआ है। जो खर्च होगा मै दूंगा।

(पंडित विष्णुदत्त आते है)

सब- दंडौत महाराज।

विष्णु—कल्याण हो। आनेमें मुझे कुछ देर हो गयी। क्षमा कीजिये।

मोती नहीं-नहीं। हम लोग भी तो अभी आये हैं।

विष्णु—कहिये मुझे क्यों स्मरण किया?

हीरा—पंडित जी, आपसे कुछ सलाह करनी है। बात यह है कि आज कल छोरोंने बड़ा सिर उठाया है। उनके मारे हमारे नाकों दम है।

मोती—सनातन धरमका तो उन्हें बिलकुल ही भय नहीं है।

भूरा--हम ब्राह्मणोंकी तो वह जड़ काटते हैं। बाणियाँ होकर ब्राह्मणोंको उपदेश—

विष्णु—वह जो हैं सो क्या कहते है ?

बुद्धू—कहते अपना सिर हैं। जो काम बाप दादोंने नहीं किया वही वह लोग करना चाहते हैं।

भूरा—(बुद्धूमलकी ओर संकेतकर) आप ही जैसे दाताओंके भरोसे इस कलजुगमें भी धरमका नाम बना है। (पण्डितजीसे) क्यों बिसुनदत्तजी ?

विष्णु—भूरालालजी, आप जो है सो कहते हैं सो ठीक ही है परन्तु—

हीरा—पिंडत जी, आप जानते ही हैं कि जनेऊ लेना कितना कठिन काम है। फिर भी छोरे जनेऊ लेनेके लिये नाको दम कर रहे है।

भूरा—इस अन्धेरका भी भला कुछ ठिकाना है। जनेऊ लेना तो हम ब्राह्मणोंका काम है। वैस्योंका काम बस दान धरम करना है।

मोती—यही नही। उनकी नजर हमारे रोजगार धन्धे पर भी है। कहते हैं विलायती कपड़े मत बेचो—विदेशी चीनी और नोन मत मंगाओ। भला ऐसा कभी हो सकता है ?

भूरा—कभी नहीं। बापदादोंसे जो काम होता चला आया है और जिससे दो पैसे मिल रहे हैं उसे छोड़ देना सनातन धरम नहीं है।

मोती—इनका यह कहना कि सदाचारी बनो और भी अन्याय है। सदाचारी बननेसे क्या काम चल सकता है ?

भूरा—कभी नही। रोजगार धन्धेमे झूठ बोलनेका दोस है भी नही। क्यों पिंडत जी?

विष्णु—तो क्या जो है सो चिलम पीलेमें झूट बोलनेका दोष है?

हीरा—अगर हो भी तो उसका पाप धरमसाला, पिंजरा-पोल, विद्यालय, औसधालय, वाट, छेत्र बनवा देनेसे मिट जाता है। इसके सिवा हम लोग गंगाजी रोज नहाते, एकादसी अमावसको घाटियों को पैसे बाँटते और मंदिरमें कथा सुनते हैं। चीटियोंको चीनी डालते हैं। क्या इतने पर भी पाप बना ही रहेगा?

भूरा—कभी नहीं अन्नदाता। क्यों पिंडत जी?

विष्णु—पंडित जी तेरी तरह जो है सो हांमें हां मिलाने नहीं आये हैं। झूठ बोलनेमे पाप नहीं—जो है सो हड्डी मिली चीनी बेचनेमें पाप नहीं, घीमें चर्बी मिलानेमें पाप नहीं,--जो है सो झुठी गंगाजली उठानेमें पाप नहीं, व्यभिचारमें पाप नहीं तो फिर पाप किसमें है?

भूरा—आज भंग पीकर आये हो क्या जो ऐसी बातें बोल रहे हो।

विष्णु—भंग पीकर तो जो है सो तू आया है। मैं तो भग क्या कभी कंकड़ भी नहीं पीता।

मोती—पिंडत जी, जाने दीजिये। सासतरकी बातें कहिये। (भूरालालसे) भूरा, चिलम तो पी।

(भूरालाल चिलम भरकर पीता और पिलाता है)

हीरा—हां हां सासतरकी बातें कहो।

विष्णु—शास्त्रकी बाते क्या पत्थर कहूं। कोई सुननेवाला भी तो हो।

मोती—क्या सासतरमें लिखा है कि वैस्य जनेऊ ले और गायतिरी जपें ?

विष्णु—लिखा नही तो जो है सो क्या मैं अपने मनसे कहता हूं ?

बुद्धू—अच्छा बुढ़ापेमें व्याह करना लिखा है या नही ?

विष्णु—नहीं।

भूरा—जरूर लिखा है। एक व्याह क्यों बारह तक लिखे है। यह झूठ बोलता है। समाजी हो गया या छोरोंसे मिलगया है।

बुद्धू—यही बात है(बिगड़कर)आप यहांसे पधारो महाराज।

मोती—हां हां पधारो।

हीरा—बस अभी पधारो।

पन्ना—एकदम पधारो।

विष्णु—मैं तो पधारता हूं पर तुम भी अपने पापोंका प्रायश्चित करने के लिये जो है सो तैयार हो जाओ। (उठकर) धर्म्मके नाम पर जो है सो बहुत अधर्म्म हो चुका। अब पापकी नौका जो है सो शीघ्र डूबेगी। मैं दक्षिणाके लोभसे जो है सो तुम्हारी हां में हां नही मिला सकता। यह काम जो है सो

भूरालालजी करेंगे। मैं यों नहीं आया। जब कईवार बुलाया तब आया। अच्छा जो है सो मैं जाता हूं। (जाता है)

भूरा—अन्नदाता, इसका नाम ब्रह्मपुरीसे काट दो। यह समाजी हो गया।

कुद्द—हां काट दो। (कुछ सोचकर) अब क्या करना चाहिये सो बताओ।

बसन्त—बात बेफायदे बहुत बढ़ गयी। शान्तिसे काम करना था। खैर अब मददके लिये पुलिस कमिश्नरके पास दरखास्त देनी चाहिये नहीं तो बात बिगड़ जायगी। सोचनेकी बात है।

कुद्द—बात तो तैने चोखी कही। कमिश्नर साब सबने ठीक कर देसी।

मोती—म्हारी भी यही राय है।

हीरा—थारी राय सो म्हारी राय।

भूरा—बहुत ठीक अन्नदाता बहुत,—

(हसक्कड़ और रोअक्कड़ आते हैं)

हं—मैं कहता हूं हंसना अच्छा, यह कहता है रोना।
अब बोलो तुम सेठो जल्दी, हंसना या अब रोना ?
रो—हंसना भला या रोना सेठो, हमको तुरत बताओ।
सगावत गीता लेकर झटपट सबी राय सुनाओ॥

(कुछ सोचकर) नहीं अब राय सुनानेकी जरूरत नहीं। चूंकि सेठजी समाजकी भलाईके लिये पुलिस कमिश्नरके पास

रोने जाते हैं इसलिये रोना अच्छा है। अगर हंसना अच्छा होता तो यह लोग यहां बैठकर कभी न रोते ।

हॅ—नहीं इससे तो मेरी ही जीत हुई । अगर रोना अच्छा होता तो सेठजी हाट बाट तमाम रोते। यहां छिपकर या पुलिस कोर्ट जाकर न रोते। चूंकि नवयुवक दल जहां जाता है वहीं इन बूढ्ढोंकी अक्लपर खूब हँसता है। इसलिये हंसना अच्छा है।

रो—नहीं, यह बात नहीं है। चल दूसरी जगह ।

हॅ—चल ।

(दोनो हसते रोते जाते है।)

पांचवां दृश्य ।

बागकी कोठी ।

(वसन्त, लल्लू और कल्लू)

लल्लू—क्यों भई आज ऐसे सुस्त क्यों हो ?

कल्लू—क्या आज गाना बजाना न होगा ?

बसन्त—आज तबीयत बड़ी खराब है। सोचनेकी बात है, किसी काममें जी नहीं लगता ।

लल्लू—क्यों कारण क्या है ?

बसन्त—कुछ नहीं ?

लल्लू—तोभी, कुछ तो कहो।

कल्लू—जरूर कहो।

बस—कहकर क्या होगा, सोचनेकी बात है।

लल्लू—कारण मालूम होनेसे आपकी उदासी दूर करनेका उपाय करूंगा।

कल्लू—अगर जान देनेकी जरूरत आ पड़े तो वह भी दूंगा

बस—जान देनेकी नौबत तो शायद न आवेगी। लेकिन काम जरा टेढ़ा है। तुम दोनो चाहो तो आसानीसे कर सकते हो। सोचनेकी बात है।

लल्लू—आखिर सुनूं भी तो बात क्या है?

कल्लू—बस कही डालिये। देर न कीजिये।

बस—भई बात वह है कि आज देवीदयालने मेरा बड़ा अपमान किया है। उसकी बातें मेरे कलेजेमें चुभ गयी हैं। जब तक इसका बदला न लूंगा मेरा चित्त ठिकाने न होगा।

लल्लू—यह कौन बड़ी बात है। देवीदयाल किस खेतकी मूली है। उसे तो कहिये अभी ठीक करदूं।

कल्लू—आखिर हुआ क्या?

बस—हुआ यह कि देवीदयाल अपने मकानपर फिर ५०) पचास रुपये कर्ज मांगने आया। मैंने देनेसे इनकार किया और—

कल्लू—यह बहुत अच्छा किया।

बसन्त—और कहा कि अगर वेजूकी बेटीसे मुलाकात करा दो तो पांच सौ योंही दे सकता हूं।

कल्लू—यह तो बहुत ही ठीक कहा। फिर?

वसन्त—फिर क्या इसपर वह बिगड़ उठा।

लल्लू—बड़ा उल्लू है। इसमें बिगड़नेकी कौन सी बात थी। (हँसता है)

कल्लू—अगर इतनी ही समझ होती तो बिगड़ता ही क्यों? (हँसता है)

वस—सोचनेकी बात है। मेरे रुपये बाकी रखकर मुझीसे शेखी। यह मुझसे बरदाश्त न होगा। इस गुस्ताखीका मजा उसे जरूर चखाऊंगा।

लल्लू—जरूर चखाइये। नहीं तो हम लोग मुंह दिखाने लायक़ न रहेंगे। ऐसी हिमाकत।

कल्लू—घरमे तो चूहे दण्ड पेलते हैं और बाहर इतना मिजाज।

वस—अब कोई ऐसा उपाय सोचो जिससे अपना रङ्ग रह जाय।

लल्लू—(सोचकर) उपाय तो सोचा सुचाया है। ७५) वाला रुक्का आपसे उसने भरपायी नहीं कराया और अभी वह शायद आपके ही पास है। उसकी कर दीजिये नालिश। डिगरी होनेपर गिरफ्तार करा दीवानी जेलमें भेज दीजिये।

कल्लू—उधर वह जेल जाय और इधर उसकी बहनको हथियानेका मौका मिले।

वस—सोचनेकी बात है। वह कैसी है?

कल्लू—यह मत पूछो। सौमें एक है। जवानी फूट निकली है। जिस दिन शादी हुई उसी दिनसे उसका खसम लापता है।

बस—तब तो उसे जरूर फांसना चाहिये। एक पन्थ दो काज। सोचनेकी बात है।

खल्लू—तो इस खुशीमें हम लोगोंका मुंह मीठा करो।

कल्लू—अब आप फिक्र छोड़दें। आखिर हम लोग किस दिन काम आवेंगे?

बस—कोई है?

('हां जी' कहता नौकर आता है)

बस—मुन्नाजान आगयीं?

ग्वाला—जी हां।

बसन्त—खाने पीनेका सामान ठीक करो।

ग्वाला—बहुत अच्छा। (जाता है)

बसन्त—सोचनेकी बात है। चलो भीतर चलें।

दोनों—चलिये। (सब जाते हैं)



छठा दृश्य

वसन्तका घर ।

(श्यामा और रुकमिन)

श्यामा—कह रुकमिन आज किधर भूल पड़ी ?

रुक—भूल क्या पड़ी पेटके धन्धे से छुट्टी ही नहीं मिलती है। विसनियांका बाप तो कुछ करता धरता नहीं। मुझे ही सब काम करने पड़ते हैं ।

श्यामा—मैंने तो सुना है कि उनकी आजकल खूब चली बनी है। उनके विना कोई पञ्चायत ही नहीं होती।

रुक—होगी। मुझे तो एक पैसा भी नहीं देता। मैं तो दस घरोंकी बहू बेटियोको मेंहदी महावर लगा और पापड़ बेचकर किसी तरह पेट भर लेती हूं।

श्यामा—पापड़ बेचना अच्छा पर मेंहदी महावर लगाना अच्छा नहीं। यह काम तू छोड़ दे।

रुक—छोड़ दूं तो खाऊं क्या ? बहूजी, क्या यह काम बुरा है ?

श्यामा—बुरा नहीं तो क्या ? ब्राह्मणी होकर सेठानियोंकी सेवा करना ! यह दोनोके लिये पाप है। तेरे पाव मैं छूऊं या तू मेरे छूयेगी ? इसके सिवा ब्राह्मणियोको दासवृत्ति शोभा नहीं देती ।

रुक—यह तो नयी बात नहीं है। सदासे होती आयी है।

श्यामा—यह कोई नियम नही कि सभी पुरानी बातें अच्छी और नयी बुरी होती हैं। शायद कभी कोई भूल हो गयी तो क्या बराबर भूल करनी चाहिये ?

(राधा आती है)

रुक—हमारे तुम्हारे पुरखे क्या मूरख थे जो भूल करते ?

श्यामा—मूर्ख और ज्ञानीकी बात नहीं है। भूल करना मनुष्यका स्वभाव है। बड़े बड़े ऋषि मुनियोंसे भी भूल हो सकती है।

राधा—तो इसका मतलब तो यही हुआ कि तू अपने बाप-दादोंसे ज्यादा चतुर है। तभी तो उनकी भूलें निकालती है।

श्यामा—मेरे कहनेका यह मतलब नहीं कि हमारे पुरखे मूर्ख थे और मैं ज्ञानी हूं पर यह है कि भूल और भ्रम सबसे होना सम्भव है। जो ज्ञानी हैं वह भूल मालूम होनेपर मान लेते हैं और मूर्ख मानते नहीं।

राधा—यानी हम सब मूरख हैं। आजकलकी बहू बेटियोंमें यह बड़ा भारी ऐब हो गया है कि वह अपने आगे किसीको लगाती ही नहीं। हायरे कलजुग !

रुक—अच्छा आओ आज तो मेंहदी रचा लो।

श्यामा—मैं तो ब्राह्मणियोंसे अब पैर नहीं छुआती। जिस दिनसे मैंने छापेमें पढ़ा उसी दिनसे कसम खाली है।

रुक—तुमने तो कसम खाली। मैं अब क्या खाऊं ?

राधा—छापावालोका सिर। जिस दिनसे छापा चला उसी दिनसे सत्यानास हुआ। छापावालोको मेहदी महावरसे क्या मतलब जो उसके पीछे पड़े रहते है।

श्यामा—रुकमिन, क्या गुलामीके सिवा संसारमे और कुछ काम नहीं है? याद कर तू किसकी सन्तान है और तेरा क्या धर्म्म है? वैश्योकी सेवा करने और टुकड़े तोड़नेके लिये ब्राह्मण कुलमे तेरा जन्म नहीं हुआ है। तू शेरनी होकर अपनेको गीदड़ समझ रही है। बड़े भाग्यसे मनुष्य शरीर मिलता है। उसमें भी ब्राह्मणका चोला। ऐसा काम कर जिसमे देशका—जातिका कल्याण हो। परायी आस छोड़कर अपने परिश्रमका भरोसा कर। गुलामी कर कभी कोई उन्नत नही हो सकता है। आज कल हम बहुत गिर गये हैं। अपना स्वरूप—अपना आदर्श सब हम भूल गये, इसीसे आज हमारी ऐसी दुर्दशा हो रही है। जबतक स्त्रीशिक्षाका प्रचार न होगा हमारी उन्नति नहीं हो सकती।

रुक—अबतक मैंने इसका विचार नही किया। आज आंखें खुल गयीं। अब मैं कभी किसीको मेंहदी महावर न रचाऊंगी।

राधा—न रचावेगी तो खायगी क्या? तू भी बावली हो गयी क्या?

श्यामा—खाने कमानेके लिये चरखा कातना, करघे चलाना, सीना पिरोना आदि बहुतसे उपाय हैं।

रुक—अच्छा अब मैं यही करूंगी।

राधा—अब बूढ़ा तोता राम राम जपेगा।

श्यामा—तो मैं भी तेरी सहायता १५) महीनेसे किया करूंगी।

राधा—तू जो न करे थोड़ा है। जो काम आजतक न हुआ वह अब होने लगा। हायरे कलजुग!

सातवां दृश्य।



देवीदयालका घर।

(विन्दा और लक्ष्मी)

लक्ष्मी—बीबीजी अबतो रंगून पहुंच गये होंगे। पहुंचकी चिट्ठी आज भी न आयी।

विन्दा—आज न आयी तो कल परसो तक आ जायगी।

लक्ष्मी—आज जाने क्यों मेरा जी बहुत घबराता है। दायीं आंख भी फड़कती है।

विन्दा—कुछ नही, यह मनका भ्रम है। भगवानका नाम लो सब भला होगा। आज बैजू नहीं आया। जिस दिनसे भैया गये हैं वह रोज एक वेर आकर हाल चाल पूछ जाता है।

लक्ष्मी—किसी काममे फंस गये होंगे। वेचारे सब तरहसे

हमारी मदद कर रहे हैं। उस दिन अपने पाससे रुपये देकर जेल जानेसे बचाया। खर्च वर्च देकर रंगून भेजा। अगर यह मदद न करते तो हमारी क्या दशा होती?

[बैजनाथ आता है]

बैज—जीजी, अभी बातेंही कर रही हो, सोयी नहीं? आज दिनको न आ सका।

बि—कौन, बैजू भैया। तेरी बड़ी उमर है। अभी हम तेरी ही याद कर रहे थे। भैयाकी चिट्ठी नहीं आयी। बड़ी फिकर है!

बैज—फिकरकी कौनसी बात है? आज न आयी तो कल आजायगी।

बिन्दा—आजकी रात बड़ी भयावनी मालूम होती है।

बैज—भयावनी है तो क्या हुआ। जाओ सोओ। जबतक मेरे हाथमें यह लट्ठ है कुछ डर नहीं। अच्छा मैं जाता हूं। निश्चिन्त रहना (जाता है।)

बिन्दा—चलो सोएं।

लक्ष्मी—चलो। (चौंककर) पिछवाड़ेकी तरफ यह खुड़का कैसा हुआ?

बिन्दा—(कान लगाकर) हां कुछ होता तो है। ठहरो, मैं देखती हूं क्या है।

[चार पाच आदमी मुहपर नकाब डाले और लाठी लिये आते है]

विन्दा—तुम कौन हो ? यहां क्यों आये ?

पहला—यही हैं पकड़ो इसे।

विन्दा—मुझ गरीबिनको पकड़कर क्या करोगे ? मेरे पास कुछ नहीं है।

लक्ष्मी—(रुंधे गलेसे) चोर ! चोर !! दौड़ो !

दूसरा—चुप। खबरदार जो चिल्लायी। (धक्का देता है)

[लक्ष्मी भयसे मूर्च्छित होती है]

पहला—(विन्दाकी तरफ इशारा कर) इसे पकड़ो। देर न करो।

विन्दा—वैजू ! दौड़ो ! दौड़ो !

पहला—कपड़ा ठूंसो मुंहमे और उठाकर ले चलो।

(दो डाकू कपडा मुहंमे ठूसते और विन्दाको उठाकर चलते हैं)

[वैजनाथ दौड़ता हाफता आता है]

वैज—खबरदार जो आगे बढ़े। मेरे रहते ऐसा नहीं हो सकता।

[वैजनाथ लाठी मारता और बचाता है। पीछेसे एक डाकू मारता है और वैजनाथ गिरता है। डाकू विन्दाको ले चल देते हैं]

(नेपथ्यसे)—"डरो मत हम आ पहुंचे।"

[मोहन, सोहन, और सेवासमितिके स्वयसेवकोंके साथ भोलानाथ आता है]

भोला—(वैजनाथसे) कहो क्या बात है ?

वैजू—डाकू बहनको ले गये ।

भोला—किधर गये ? कितनी देर हुई ?

वैज—अभी—अभी इधर गये । (इशारा करता है)

भोला—सोहनलाल, तुम तीन जने इन्हें सम्हालो । मैं और मोहनलाल डाकुओंकी खोजमे जाते है । (जाते हैं)

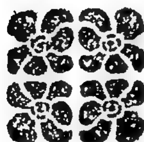
[मदन आंखे मलता और रोता आता है)

मदन—अम्मा, अम्मा, कहां गयी ।

(सोहनलाल मदनको पुचकारता और स्वयसेवकगण वैजनाथ और लक्ष्मीकी सेवा शुश्रूषा करते है ।

परदा गिरता है)

प्रथम अङ्क समाप्त ।



द्वितीय अङ्क

पहला दृश्य।



(मन्दिरका आंगन।)

(विष्णुदत्त, ब्राह्मणगण और बालकगण)

१ ला—मेरा प्रस्ताव है कि आजकी इस ब्राह्मणसभाके सभापति श्रीमान् पण्डित विष्णुदत्तजी हों।

२ रा—मैं समर्थन करू हूं।

३ रा—मेरो अनुमोदन है।

(तालियां पिटती हैं और विष्णुदत्तजी गद्दीपर बैठते हैं)

(भूरामल और उनके साथी आते हैं)

भूरा—(स्वगत) विसनदत्त सभापति हो गया यह तो अच्छा नहीं हुआ। यह जरूर हमारी पोल खोलेगा। सभाको किसी न किसी तरह रोकना चाहिये। (साथीसे) भई यह तो बुरा हुआ। विसनदत्त आज जरूर हम लोगोंकी बुराई करेगा। ऐसा उपाय करो जिसमें सभा भंग हो जाय।

साथी—बहुत अच्छा। कौन बड़ी बात है। यह तो मेरे बायें हाथका खेल है।

भूरा—तो चलो बैठें ।　　(बैठते हैं)

विष्णु—विद्यार्थी जो हैं सो मङ्गलाचरण करें ।

(दो विद्यार्थी गाते है)

"यं ब्रह्मा वरुणेन्द्ररुद्रमरुतः स्तुन्वन्ति दिव्यैः स्तवैः
वेदैः साङ्गपदक्रमोपनिषदैर्गायन्ति यं सामगाः ।
ध्यानावस्थित तद्गतेन मनसा पश्यन्ति यं योगिनो
यस्यान्तं न विदुः सुरासुरगणा देवाय तस्मैनमः ॥"

विष्णु—(खड़े होकर)

"गजाननं भूतगणाधिसेवितं कपित्थजम्बूफलचारु भक्षणम् ।
उमासुतं शोकविनाशकारकं नमामि विघ्नेश्वर पादपंकजम् ॥

जगन्नियन्ता जगदीश्वरको जो है सो वारंवार अभिवादनकर आप भूदेवोको नमस्कार करता हूं। आप लोगोंने जो हैं सो यह आसन प्रदानकर मेरा बड़ा गौरव बढ़ाया है। मैं कदापि जो है सो इस योग्य नहीं। मैं आपके अनुग्रहके लिये जो है सो अनेक धन्यवाद प्रदान करता हूं।

सज्जनो, आप लोग जानते है कि प्राचीन कालमें ब्राह्मणोंका जो है सो कैसा प्रताप था। अपने तपोबल और विद्याबलके प्रभावसे ब्राह्मण जो है सो सब वर्णोंमें श्रेष्ठ थे और राजा महाराजा जो है सो सदा हाथ जोड़े खड़े रहते थे। इसीसे विश्वामित्रको जो है सो कहना पड़ा था "धिग्वलं क्षत्रियबलं ब्रह्मतेजो बलं बलं।" अर्थात् ब्रह्मबलही बल है। क्षत्रियबलको जो

है सो धिक्कार है। एक ब्रह्मदण्डने सब शास्त्रोंको जो है सो परास्त कर दिया! (हर्षध्वनि) परन्तु दुःखका विषय है कि आजकल हम जो है सो बहुत गिर गये हैं। न विद्या है न तपोबल है और न जो है सो तेजस्विता ही है। हम लोग अपना स्वरूप ही जो है सो भूल गये है। हम बनियोंके दास बनकर उनके टुकड़े तोड़नेमे ही जो है सो अपना परम पुरुषार्थ समझते हैं और नीचसे नीच कर्म करनेमे जो है सो तनिक भी संकोच नही करते हैं। (शेम, शेम,) रोटी करना, चिलम भरना, मेंहदी महावर रचाना क्या —

भू० का साथी—घरू बात बोलनेकी यहां जरूरत नहीं।

२ रा—बैठ जाइये। (तालियां और सीटियां)

३ रा—बोलिये, बोलिये—

(सनातन धर्मकी जयकी आवाजे)

भूरा —यह समाजी है—इसे निकालो।

१ ला—इसकी ब्रह्मपुरी बन्द करो।

(कोई 'बोलिये बोलिये'—कोई 'नहीं नहीं'—कोई सनातन धर्मकी जय, चिल्लाता है। गड़बड होती है और सब लोग खड़े हो जाते हैं। हसते और रोते हसक्कड और रोअक्कड आते है)

हंस—मैं कहता हूं हंसना अच्छा यह कहता है रोना।
अब बोलो तुम पंचो जल्दी हंसना या अब रोना॥

रो—हसना भला या रोना पंचो हमको तुरत बताओ ।
तामा तुलसी लेकर हमको सच्ची राय सुनाओ ॥

(शोर गुल—गडबड देख एक एक कर सब चल देते हैं)

दूसरा दृश्य



गंगातट—जनाना घाट ।

(राधा और कई स्त्रियां)

राधा—अरी तूने कुछ सुना ?

१ ली—नहीं । क्या हुआ ?

राधा—हुआ क्या घोर कलजुग आगया । आज कलकी बहू बेटियोंमें लाज सरम तो बिलकुल ही न रही ।

२ री—आखिर बात क्या है कुछ बता तो सही ।

राधा—बताती हूं पर किसीसे कहना मत । बड़े घरकी बात है ।

३ री—नहीं कहूंगी । मुझे क्या पड़ी है जो किसीसे कहूं ।

१ ली—राधा, तू जानती ही है मेरी ऐसी आदत नहीं ।

२ री—और मै तो कभी किसीसे बोलती ही नहीं । हां कोई नयी बात होती है तो सिरियाके बापसे जरूर कह देती हूं । पर यह उससे भी न कहूंगी ।

राधा—बसन्ताकी बहू अब छापा पढ़ती—

१ ली—(आश्चर्य्यसे) अयं छापा पढ़ती है! (जीभ काटकर)

२ री—क्या कहा छापा पढ़ती है! (छातीपर हाथ रखकर)

३ री—जो बात अब तक नहीं हुई वही अब होने लगी।

राधा—कलजुग आ गया। अभी क्या हुआ है। अब वह ब्राह्मनियोंसे मेहदी महावर भी न रचावेगी—

१ ली—क्यों?

राधा—कहती है इससे पाप होगा। ब्राह्मनियोंसे पग न छुआना चाहिये।

२ री—पग न छुआवे तो ब्राह्मनियां खायंगी क्या? इसी बहाने ब्राह्मनोंके घर कुछ चला जाता है। ऐसे कौन देता है।

राधा— यह तो वह समझती नहीं। वह अपनी अकलके आगे किसीको लगाती ही नहीं।

३ री—इसीसे तो खसम भी मुंह नहीं देखता है। जो बात कुलमें सदासे चली आयी है उसे छोड़ना क्या कभी अच्छा है—

राधा—अब तुम सब अपने, अपने हाथों मेंहदी महावर रचाओ। रुकमिन अब नहीं रचानेकी। वह दारी भी उसके कहेमें आ गयी।

१ ली—क्यो नहीं आवेगी! सैकड़ों चूहे खाके बिल्ली हज्जको चली हैं।

२ री—मैं तो उनसे जाकर कहूंगी और बिसनियांके बापकी दुकना वन्द करवा दूंगी।

(बसन्त नहाती हुई स्त्रियोका फोटो चुपकेसे लेता है)

३ री—रुकमिनकी यह टेक कितने दिन रहेगी यही तो देखना है।

राधा—मुझसे क्या कहती हो। बेटी, यहां तो यही खेलना खेलते बाल पक गये। मैं भी कभी ज्वान थी पर ऐसी—

१ ली—राधा, अब जाती हूं देर हो गयी।

राधा—जाना। ऐसी जल्दी क्या है। मै भी कभी ज्वान थी पर ऐसी बेसर्मी कभी न की। आज कलकी बहू बेटियां खसमके सिर पर चढ़ी रहती है। मैने तो एक घंटी जल भरकर भी उन्हें न दिया। मरते मर गये पर उनके कहनेसे मैंने गंगा नहाना न छोड़ा। सास ससुरके सामने उनका कहना मान लेती तो लोग क्या कहते! पर अब लाज सरम कहां! कलजुग तेरी बलिहारी।

१ ली—अच्छा अब जाती हूं।

राधा—चल मैं भी चलती हूं। राम राम हरे राम।

(सब जाती है। एक युवती पीछे रह जाती है। वसन्त आता है)

वस—आज कहां कब?

युवती—कालीघाट। तीसरे पहर। (जाती है)

वस—(स्वगत) अब मैं भी वहीं चलूं सोचनेकी बात है॥

(जाता है)

तीसरा दृश्य

सड़क।

भिखारी भिखारन।

(गाते हैं)

भिखारी—क्या तन मांजतारे एक दिन मांटीमे मिल जाना।

भिखारन—कौड़ी कौड़ी माया जोड़ी, मल मल धोयी काया।

छायाके पीछे तू धाया, नाहक जनम गंवाया ॥१॥

भिखारी—क्या तन मांजतारे———

भिखारन—हुन्डी पुरजा मोटर शेयर, यही धरे रह जावे।

जमके सोटे पड़े पीठ जब, काम नहीं कुछ आवे।२।

भिखारी—क्या तन मांजतारे———

भिखारन—पाप पुन्य तेरे संग जायंगे, और नहीं कुछ जाता।

झूठी सेखी करके वन्दे, क्यो नाहक इतराना ॥३॥

भिखारी—क्या तन मांजतारे———

भिखारन—अपनी तिरिया घरमें रोवे, पर तिरिया रंगराता।

गो मातासे नाक सकोरे, कुत्ते पाल अघाता ॥४॥

भिखारी—क्या तन मांजतारे———

भिखारन—सांझ सवेरे माला जपता, गंगा जी है न्हाता।

कपट करे औ परधन हरता, झूठी कसमें खाता ॥५॥

भिखारी—क्या तन मांजतारे एक दिन मांटी मे मिल जाना ।

(दोनों गाते जाते हैं)

(साधु गाता हुआ आता है)

साधु—हरे कृष्ण हरे कृष्ण हरे कृष्ण हरे हरे ।

छोड़ और जगत काम, लोभ मोह वास दाम

यही नाम आठ जाम, सवी ठाम जपा करे

हरे कृष्ण हरे कृष्ण——

(स्वगत) आज अभीतक कोई शिकार न मिला । चलूं आगे बढ़ूं शायद कोई मिल जाय । (एक ओर जाता है)

(विन्दा घबरानीसी आती है)

विन्दा—(स्वगत) अब कहां जाऊं क्या करूं ! रास्ता मालूम नहीं । एक विपतसे छूटी कहीं दूसरीमें न फंस जाऊं । मैं सपनेमें भी नहीं जानती थी कि वसन्त इतना दुष्ट है और मेरे साथ ऐसा बुरा व्यवहार करेगा । वह जितना नीच और लम्पट है उसकी स्त्री श्यामा उतनी ही भली और दयालु है। हा विधिने भी कैसी जोड़ी मिलायी है ! अगर श्यामा मदद न करती तो मेरा छुटकारा कभी न होता । खैर अब क्या करूं ? वह्रू और मदनपर न जाने कैसी बीतती होगी । भैयाकी चिट्ठी आयी होगी । वैजू जाने क्या सोचता होगा । गांववाले क्या

कहते होंगे। (ठहरकर) घर यहांसे कितनी दूर है यह भी मालूम नहीं। वह साधूजी आ रहे हैं। चलूं इनसे पूछूं। इनसे पूछनेमे क्या डर है।

(साधु आता है)

साधु—हरे कृष्ण हरे कृष्ण इत्यादि।

विन्दा—बाबाजी हाथ जोड़ती हूं। यह कौनसा नगर है?

साधु—(सहर्ष) कल्याण हो बेटी। इस नगरका नाम कलकत्ता है। क्या तू यहां कभी नहीं आयी। तेरा घर कहां है?

विन्दा—नहीं बाबाजी, मैं कभी घरसे बाहर नहीं निकली। बड़ी विपदमे फंसकर यहां पहुंची हूं। यहां मेरा कोई जाना पहचाना भी नहीं। मेरा घर तो पच्छिम है पर आजकल गोविन्दपुर रहती हूं।

साधु—गोविन्दपुर तो बेटी यहांसे बहुत दूर है। खैर कुछ चिन्ता नही। मेरी कुटीमे चल। वहां सब तरहका आराम होगा। वहांसे जहां तू कहेगी पहुंचा दूंगा। भूले भटकेको ठिकाने पहुचाना ही तो अपना काम है। यह कलकत्ता बड़ी भयानक जगह है। यहां बड़ी होशियारीसे रहना चाहिये। यहां बड़े बड़े ठग भेस बनाये फिरा करते हैं।

विन्दा—बाबाजी, मुझे तो बड़ा डर लगता है।

साधु—जहां मैं हूं वहां भला डरकी कौनसी बात है। तू मेरी कुटीमें चल।

चिन्द्रा—(स्वगत) यह असली साधु है इसीका क्या सुकृत है।

साधु- सोचती क्या है—चल। अगर तुझे मेरा विश्वास नहीं है तो जहां तेरा मन हो जा। पर ठगोंसे होशियार रहना।

(जाना चाहता है)

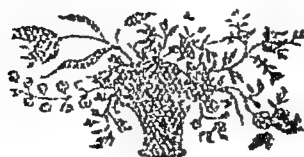
चिन्द्रा– (स्वगत) अगर ठग होता तो यों लापरवाही न दिखाता। चलूं इसीकी कुटीमें। जो भागमें लिखा है होगा। जिस परमात्माने अभी रक्षा की वही फिर करेगा। (प्रकट) अच्छा बाबाजी, चलती हूं।

साधु - (सहर्ष) चली आ पीछे पीछे। हरे कृष्ण हरे कृष्ण (फिर आता है) (दोनों जाते हैं)

(तीन स्वयंसेवक आते हैं)

१ ला – वह देखो, साधुके पीछे पीछे एक स्त्री जा रही है। उस साधूपर मुझे सन्देह होता है। चलो पता लगावें कहां जाता है।

दोनों—चलो। (जाते हैं)



चौथा दृश्य

देवी दयालुका घर।

लक्ष्मी और बैजनाथ

लक्ष्मी—(रोकर) बीबीजीका कुछ पता लगा ?

बैज—नहीं। हमलोग तमाम ढूंढ़ आये। सेवासमितिवाले भी ढूंढ़ रहे हैं। पर अभीतक कुछ पता न चला।

लक्ष्मी—अब क्या होगा ?

बैज—क्या बताऊं बहूजी। मैं तो देवीदयालको मुंह दिखाने लायक न रहा। बड़ा अन्धेर हो गया। तुम धीरज धरो। मैं फिर कल खोजमें जाऊंगा। यह बसन्तकी बदमाशी है। उसके सिवा दूसरेका यह काम नहीं।

लक्ष्मी—उनका हमलोगोंने भला क्या बिगाड़ा है जो इस तरह हाथ धोकर हमारे पीछे पड़े हैं ?

बैज—यह पीछे बताऊंगा। अभी मैं यह कहने आया हूं कि तुम अगर अपने मायके चली जाओ तो मैं निश्चिन्त होकर जीजीका पता लगाऊं।

लक्ष्मी—तुम्हारा कहना ठीक है। पर मैं अभी कहीं न जाऊंगी। जो कुछ सुख दुख होगा भोग लूंगी पर उनके हुक्म बिना घर न छोड़ूंगी। अभीतक उनकी चिट्ठी भी नहीं आयी। जाने क्या होना है।

वैज—तो अच्छी बात है। यहीं रहो पर होशियारीसे रहो, न मालूम कब क्या आफत आवे। अच्छा मैं जाता हूं। (जाता है।)

(रुकमिन आती है)

रुक—देवीदयाल मिस्सरका यही घर है क्या?

लक्ष्मी—हां यही घर है। क्यों?

रुक—उनकी लुगाईसे कुछ काम है।

लक्ष्मी—कहो क्या काम है?

रुक—उन्हे छोड़ मै दूसरेसे नहीं कह सकती।

लक्ष्मी—जिसे तुम ढूंढती हो वह मैं ही हूं। कहो क्या कहना है।

रुक—यहां नहीं कहूंगी। कोई सुन लेगा तो बना बनाया काम बिगड़ जायगा।

लक्ष्मी—यहां कोई नहीं है। जल्दी कहो मेरा जी घबराता है।

रुक—नहीं मैं न कहूंगी। तुम उसकी भाभी न हुई तो उसकी जान नाहक जायगी।

लक्ष्मी—(घबराकर) क्या तुम बीबीजीकी खबर लायी हो? जल्दी कहो वह कहां हैं। मैं अभी बैजनाथको बुलाती हूं।

रुक—हां मैं उन्हींकी भेजी आयी हूं। अगर किसीको बुलाओगी तो मैं कुछ न कहूंगी—मैं जाती हूं—

लक्ष्मी—नहीं नहीं। किसीको न बुलाऊंगी। हाथ जोड़ती हूं। बताओ बीबीजी कहां हैं—कैसी हैं?

रुक—कहां हैं यह तो मैं नहीं बता सकती। उनसे मिलना चाहो तो मिला सकती हूं।

लक्ष्मी—अकेली भला मैं कैसे चलूं। बैजनाथको साथ ले चल सकती हूं। वह अपना ही आदमी है उसके चलनेसे कुछ हर्ज न होगा।

रुक—जरूर हर्ज होगा। अगर न चलना हो तो जाने दो। मैं जाती हूं। (जाना चाहती है)

लक्ष्मी—नहीं नहीं जरा ठहरो—मैं चलती हूं।

रुक—चलना हो तो जल्दी करो। नहीं तो भेंट न होगी।

लक्ष्मी—(स्वगत) बैजनाथसे पूछे विना कैसे जाऊं। न जाऊं तो मुश्किल और जाऊं तो मुश्किल। क्या करूं कुछ समझमें नहीं आता है।

रुक—सोचती क्या हो? चलना हो तो चलो। नहीं तो साफ जवाब दो।

लक्ष्मी—अच्छा चलती हूं। (स्वगत) सांप छछुन्दरकीसी गत हुई। न जाते बनता है न रहते। अब क्या करूं!

रुक—तो चलो देर न करो। भेंटकर तुरत लौट आना। इसमें डर क्या है?

लक्ष्मी—कुछ नहीं। चलो। बैजनाथ भी संग चलता तो अच्छा होता। उसे भी पुकार लूं।

रुक—तो तुम बैजनाथको लेकर आना, मैं जाती हूं।

लक्ष्मी—कहां जाऊंगी पता ठिकाना तो बताती जाओ।

रुक—पता उसीसे पूछ लेना। अब मै नही ठहर सकती।

(जाना चाहती है)

लक्ष्मी—अच्छा ठहरो चलती हू।

रुक—तो झटपट चलो।

लक्ष्मी—चलो। (दोनो जाती है)

पांचवां दृश्य।



वेश्याका घर

वेश्या और बिन्दा

वेश्या—तो क्या मेरा कहना न मानेगी?

बिन्दा—हर्गिज नही।

वेश्या—पीछे पछतायगी। मान जा। अभी कुछ नहीं बिगडा है। बड़े आरामसे रहेगी।

बिन्दा—चूल्हेमे जा तू और तेरा आराम। मै तेरी बातें कभी न मानूंगी।

वेश्या—न मानेगी तो दाना पानी विना तुझे तड़पा तड़पा कर मारूंगी।

बिन्दा—मरना मञ्जूर है पर यह घृणित काम मुझसे न होगा।

वेश्या—बेवकूफी मत कर। मेरी बात मानेगी तो दस

शौकीन बाबू तेरे गुलाम बने रहेंगे। और तू चांदीसे उजली और सोनेसे पीली हो जायगी। खाने कमानेकी यही उम्र है।

विन्दा—फिर वही बात। मैं खाक डालती हूं ऐसे सोने चांदी पर। मैं धनसे धर्मको बढ़कर समझती हूं।

वेश्या—धरम करनेकी यह उम्र नहीं है। बेटी, यह धन कमानेकी उम्र है। मैं तेरे भलेके लिये कहती हूं।

विन्दा—मेरा भला इसीमे है कि तू मुझे छोड़ दे। हाय दैव मैं किस आफतमें फंस गयी! न उस धूर्त्त साधूकी मीठी मीठी बातोंका विश्वास करती और न इस नरक कुण्डमें पहुंचती। हा भगवान!

वेश्या—अब भगवानको भूल जा और मेरा कहना मान नहीं तो कुत्तेकी मौत मारी जायगी।

विन्दा—मैं मरनेसे नहीं डरती। मारना है तो अभी मार डाल जिससे और दुख भोगना न पड़े।

वेश्या—तेरा रूप देखकर दया आती है नहीं तो अबतक इस जिद्दका मजा चखा देती। मैं फिर पूछती हूं मेरा कहना मानेगी या नहीं?

विन्दा—दममें दम रहते कभी न मानूंगी। चाहे जितना सता ले। मैं कभी पाप कार्म न करूंगी। देख तुझे भी एक दिन मरना है। यह पापका धन तेरे साथ न जायगा। सारी उम्र तेरी इसी पापमें बीत गयी। अब मुझे भी उसीमें लगाया चाहती है। भगवानके यहां क्या जवाब देगी?

वेश्या—बस बस रहने दे अपना लेकचर । न मालूम तुझसी कितनी छोकड़ियोंको ठीककर मैंने छोड़ दिया है और तू मुझे ही धरम सिखाने चली है । मै समझ गयी तू सीधे तौरसे राहपर आनेवाली नही है ।

विन्दा—हाथ जोड़ती हूं, पांव पड़ती हूं । मुझे छोड़ दे ।

वेश्या—मेरा कहना मान ले बस छुटकाराही छुटकारा है ।

बिन्दा—यह तो मैं कह चुकी और फिर कहती हूं कि जीते जी यह पाप कर्म मुझसे न होगा ।

वेश्या—देख होता है या नही ।

(जाती है और मतवाला आता है)

मत—आजा मेरी गोदमे, आजा मेरी जान ।
लग जा छातीसे अभी, हो जाऊ कुरबान ॥

बिन्दा—अब यह नयी आफत आयी । क्या करूं किधर जाऊं ।

मत—मुझे गलेसे लगाओ और इधर आओ मेरी जानी—नानाकी नानी—राजाकी रानी । (आगे बढ़ता है)

विन्दा—भगवान, अब तेराही भरोसा है । अबलाकी रक्षा कर ।

मत—कौन भगवान—कैसा भगवान—अब तो मैं भगवान और तू भगवती । (आगे बढ़ता है)

विन्दा—हाय हाय अब धर्म गया । परमात्मा तेरी शरण । खबरदार जो आगे बढ़ा । मै फांसी लगा मर जाऊंगी ।

मत—फांसीसे खांसी होगी । मरना हो तो—पीछे मरना

अभी तो मेरे गले लगनेमें न डरना वरना। (हाथ पकड़ना चाहता है)

चिन्दा—(पीछे हटती है) सत्यानासी पापी, दुष्ट, तू मुझ अबलाको सतावेगा तो भस्म हो जायगा। खबरदार- -

मत—खबरदार—तकरार- बेकार—दिलदार—यार (हाथ पकड़ता है)

चिन्दा—हट जा, दूर हो पापी नीच। नाथ, जैसे द्रौपदीकी लाज रखी वैसेही मेरी रख।

हे कृष्ण मुरारे यशुदावारे प्रभू हमारे दया करो।

विनती यह मेरी विपद घनेरी करो न देरी वेग हरो।

(दरवाजा तोड़कर भोलानाथ स्वयंसेवकोंके साथ आता है)

भोला—आ गये कुछ डर नहीं।

मत—पर यह घर नहीं अड़पर सर नहीं।

(स्वयंसेवक मतवालेको हटाते हैं। चिन्दा मूर्छित होती है)

भोला—खबरदार जो बोला। मारे लट्ठके खोपड़ी चूर कर दूंगा।

मत—अच्छा पहले तू ही निबट ले।

(स्वयंसेवक चिन्दाको उठाकर ले जाते हैं। पीछे भोलानाथ जाता है)



छठा दृश्य ।



स्कूलका क्लास ।

मदन और लडके

१ ला—भई, अंगरेजीसे तो हिन्दी अच्छी क्योंकि इसमें गड़बड़झाला नहीं ।

२ रा—अंगरेजीमें हो भला तुमने क्या गड़बड़झाला निकाला ?

१ ला—अच्छा, गड़बड़झालेकी माला जपता हूं सुनो। जब D+o=डू तब G+o=गू क्यों नहीं ? F+o+o+l फूल होता है तब P+o+o+l पूल होना चाहिये। M+e+a+t मीट है तब H+e+a+t हीट नहीं हियर होता है, जब F+o+o+d फोड होता है तब D+o+e+r डीर होनेमें क्या हर्ज है ? S+i+r सरके वजनपर P+i+g पग कहनेपर न मालूम कितनी बार मेरे कान गर्म हो चुके हैं, पर हिन्दीकी चा, ची, दा, दी, ना, नीसे कभी कुछ हानि न हुई ।

२ रा—भई, अंगरेजीकी कुछ मत पूछो। लिखेंगे P+s+a+l+m और पढ़ेंगे साम। P और l ने क्या कुसूर किया जो नजरबन्द कर दिये गये ?

४ था—नजरबन्द नहीं जबांकानबन्द कहो क्योंकि P और l नजर तो आते हैं पर न जबानसे बोले जाते और न कानोंसे सुने जाते हैं ।

३ रा—खैर यही सही।

५ वां—अंगरेजीकी लीला अपरम्पार है। Singular से Plural बनानेमे भी अन्धेर है। Life का Lives पर Hoof का Hoofs Plural होता है। और सुनो Man का Men पर Mouse का Mice; Child का Children पर Tooth का Teeth होता है।

६ ठा—Gender का जुल्म तो और भी जबरदस्त है। Abbot, Abbess से काम न चला तो Father, Mother के पास पहुचे। यहां भी पेट न भरा तो He-ass, She-ass की शरण लेनी पड़ी।

१ ला—और उच्चारणका उलट फेर भूल ही गये। एकही शब्दमे एकही अक्षर का उच्चारण दो तरहसे होता है जैसे Circle & Circumference। इनमे c (सी) क और स दोनोंका काम देती हैं। अगर कहो कि शब्दके आरम्भमे c का उच्चारण स सा होता है तो Calcutta मे यह बात नहीं है। c और k मे क्या फर्क है यह आजतक मालूम न हुआ। कलकत्ते और कानपुरमें तो C का स्वराज्य है पर कालेज और काल्का में k का ही कलेवर काम कर रहा है। पर हिन्दीमे ऐसी मनमानी घर-जानी नहीं। नियमके अनुसार सीधी सड़क, आंखें बन्द किये चले आओ, ठोकर खानेका कहीं डर नहीं।

४ था—इसमें भला क्या सन्देह है। सरलतामें हिन्दीकी बराबरी कौन कर सकता है।

३ रा—अंगरेजीकी एक दिल्लगी और सुनो। Running water माने बहता पानी देखकर Walking stick का तर्जमा मैंने टहलती हुई छड़ी किया तो हेड मास्टर साहब बहुत बिगड़े। मैंने पूछा ऐसा तर्जमा क्यों न होगा तो कुछ न बोले।

५ वां—तुम लोग नाहक ही खोपड़ी खाली कर रहे हो। अंगरेजीका तो बिस्मिल्लाही गलत है। वर्णमालामें न अ न आ और A (ए) आ कूदा है। न ब का ठिकाना और न ई का पता पर A (ए) के बाद B (बी) बैठ गयी है। मालूम होता है ब और ई का सम्बन्ध गर्भमें ही हो गया।

रोदन—भई, तुम्हारी सी बारीक बातें तो मैं नहीं बता सकता पर इतना अवश्य जानता हूं कि हिन्दीके अक्षरोंका मतलब बड़ा गूढ़ है। पहले हम पढ़ते हैं क ख ग घ। क्यों कुछ समझे इसका मतलब ?

१ ला—नहीं। बतादो।

मदन—सुनो। क यानी पहले कमाओ। फिर ख खाओ फिर ग गहने बनाओ। अगर कुछ बच रहे तो घ घर बनाओ। पर अङ्गरेजीमें पहले ही कहते हैं A ऐनक लगाओ, फिर B बीड़ी लाओ, फिर C सिगार पीओ। भला कमाये बिना यह सब कोई कैसे कर सकेगा ? इसलिये अङ्गरेजी वर्णमाला गड़बड़झाला है। इसके सिवा सबसे बुरी बात तो यह है कि जब कोई पूछता है कि फर्स्टबुकमें कहां पढ़ते हो तो कहना पड़ता है गधेके पास या सूअरके बच्चेके पास।

१ ला—अब इस सूअरके बच्चेसे छुटकारा कैसे हो ?

२ रा—इस गुलामखानेको छोड़कर राष्ट्रीय विद्यालयमे नाम लिखाना चाहिये।

१ला—क्या सब लोग इसके लिये तैयार हैं ?

सब—हां हां तैयार हैं।

(घन्टी बजती है, मास्टर आता है और लडके यथास्थान बैठने है)

मास्टर—(हाजिरी बही खोलकर) नं० One

१ ला—Present Sir (हाजिर)

मास्टर—Two

२ रा—Present Sir (हाजिर)

मा—Three

३ रा—Yes Sir (जी हां)

मा—Four

४ था—Yes Sir (जी हां)

मा—Five

५ वां—Present Sir (हाजिर)

मा—Six

६ ठा—Present Sir (हाजिर)

मा—Seven

कोई—Absent (गैर हाजिर)

मा—Eight

कोई—Absent (गैर हाजिर)

मा—Name

मदन—Yes Sir (जी हां)

मा—फीस लाया ?

मदन—जी हां, एक रुपया लाया हूं।

मा—एक रुपयेसे क्या होगा। दो महीनेके ४) चार रुपये और फाइनके १॥।≈) कलसे दो महीनेकी छुट्टी होगी। आज फीस न देनेसे नाम कट जायगा।

मदन—यही तो बड़ी मुश्किलसे लाया हूं।

मा—मैं यह सब कुछ नहीं जानता। ५॥।≈) देता है या नाम काट दूं। पहली तारीखसे तकाजा कर रहा हूं, आज १५ हो गयी लेकिन तू सुनता नहीं।

मदन—सर, आजकल मांका हाथ खाली है। चाचाजी घरमें नहीं है।

मा—(डपटकर) चाचाजी घरमें हैं या बाहर इससे मुझे मतलब ? ५॥।≈) दे नहीं तो नाम काटता हूं।

मदन—हाथ जोड़ता हूं। आज १) ले लीजिये, बाकी स्कूल खुलनेपर दे दूंगा।

मास्टर—(कड़ककर) यह क्या बनियेकी दुकान है। देना है या नाम काट दूं।

मदन—(आंखोंमे आंसू भरकर) जो आपकी मरजी।

मास्टर—तो ले काटता हूं। (नाम काटता है)

(घंटी बजती है, मास्टर जाता है, मदन सर झुकाये रोता है)

१ ला—गुलामखानेकी लीला देख ली। हाजिरी लेने और फीस वसूल करनेमे घण्टा खतम। पढ़ना लिखना कुछ नही। अब क्या इरादा है ?

२ रा—इरादा तो पहले ही बता चुके। अब तो अंगरेजी स्कूलसे घृणा हो गयी। जितनी जल्दी इससे पिण्ड छूटे अच्छा है। मदनका नाम कट ही गया। चलो हम लोग भी कटवा लें।

३ रा—ऐसे नही। आज सब लोग मिलकर प्रिनसिपलके यहां चिट्ठी लिखें कि इसे राष्ट्रीय विद्यालय बनाइये नहीं तो हम लोग परसोंसे स्कूल न आवेंगे।

सब—बहुत ठीक। ऐसा ही करो। बोलो महात्मा गांधीकी जय! वन्दे मातरम्। (सब जाते हैं)

सातवां दृश्य।

सेवासमितिआश्रमका एक कमरा।

भोलानाथ और विन्दा

भोला—कहिये अब आपका क्या विचार है ?

विन्दा—विचार तो पीछे बताऊंगी पहले यह बताइये कि आपलोग मेरी रक्षाके लिये ठीक समयपर कैसे पहुंच गये ?

भोला—भगवानकी कृपासे पहुंच गये और कैसे बताऊं !

स्वयंसेवक सेवाकार्य्यमे इधर उधर घूमा ही करते हैं। आपको साधूके संग देखकर उन्हें सन्देह हुआ क्योंकि यहां दुष्टोंकी कमी नहीं है। वह लोग अनेक प्रकारके रूप बनाकर सीधे सादे आदमियोंको ठगा करते है। स्वयंसेवक पीछे पीछे ज़ाकर देख आये कि साधू आपको कहां ले गया।

विन्दा--फिर क्या हुआ ?

भोला—यही हुआ कि एक स्वयंसेवक तो वहीं रह गया और एकने आकर आश्रममें खबर दी। बस हम लोग वहां जा पहुचे। वह एक वेश्याका घर था। वह इसी तरह भोली भाली कुलकामनियोको डरा, धमका, फुसलाकर, कुलकलंकिनी बनाती और पैसे कमाती है। हम लोगोंके पहुंचनेमे जरा भी देर होती तो अनर्थ हो जाता। परमात्माने बड़ी कुशलकी जो—

विन्दा—(सिर झुकाकर) मैं आपका यह उपकार जन्म भर न भूलूंगी।

भोला—इसमें उपकारकी कौनसी बात है! मैंने तो अपना कर्तव्य पालन किया है। मनुष्य होकर जो मनुष्यकी भलाई नहीं करता उसका जन्म वृथा है।

जन्म लेते सोइ मरत रीत जगकी चलि आई।
धन्य जन्म है तासु करत जो लोक भलाई।

विन्दा—आपका कहना ठीक है पर ऐसे कितने मनुष्य है जो अपना काम काज छोड़कर परोपकारमे लगे रहते हैं। आप लोगोंकी कृपासे मेरा धर्म बच गया। मैं हृदयसे आप लोगोंको

धन्यवाद देती हूं। परमात्मासे प्रार्थना है कि आपकी प्रवृत्ति सदा सत्कर्म्ममें रहे।

भोला—परमात्मा करे ऐसा ही हो।

बिन्द्रा—अपनी समितिका कुछ हाल सुनाइये।

भोला—यहां भारतीय सेवासमिति नामकी एक संस्था है जो कई वर्षों से काम कर रही है। इसमें बड़े बड़े सेठ साहूकारोंके लड़के स्वयंसेवक बन बारीबारीसे काम करते हैं। इसके कई विभाग हैं। एक विभाग रोगियोंकी सेवा शुश्रूषा करता है, दूसरा तीर्थोंमें पर्व्वके समय या मेले ठेलेमे प्रबन्ध करता है, तीसरा विभाग इधर उधर घूमकर भूले भटके परदेशियोंकी सहायता करता है। चौथा विभाग सामाजिक अन्याचारोंका निवारण और दुर्बलोंकी सहायता करता है। दाताओंके दानसे इसका काम चलता है। सब विभागोंके अलग अलग संचालक हैं। सबके ऊपर अध्यक्ष हैं। उनकी ही आज्ञासे सब काम होते हैं।

बिन्द्रा—यह तो बड़ी अच्छी संस्था है। क्या इसमें स्त्रियां भी स्वयसेविका हो सकती हैं।

भोला—बड़े आनन्दके साथ हो सकती हैं। स्वयंसेविकाओं की आवश्यकता भी है। बहुतसी जगहोंमें स्त्रियोंके बिना सेवा-कार्य्यमें बड़ी बाधा पहुचती है। अच्छा अब आपकी क्या आज्ञा है। आप जहां कहें वहां पहुंचा आऊं।

बिन्द्रा—कहा जाऊं यही तो सोच रही हूं। (स्वगत) घर

जाकर अब क्या मुंह दिखाऊंगी ? दस आदमी दस तरहकी बाते कहेंगे। घर जाकर ही क्या करूंगी। मेरे लिये जैसा घर वैसा जंगल। शेष जीवन सेवाकार्य्यमे ही बिताऊंगी। (प्रकट) मैंने निश्चय कर लिया, अब कहीं न जाकर यही रहूंगी और सेवाकार्य्य करूंगी। पर एकबार जरा भाभी और भतीजेसे मिल लूं। न मालूम उनपर क्या बीतती होगी।

भोला—अच्छी बात है। जैसी आपकी इच्छा। अब मैं चलता हूं। समितिके उत्सवमें जाना है। (जाता है)

आठवां दृश्य।



घरके भीतरका कमरा।

श्यामा चिन्तित खड़ी है।

श्यामा—(स्वगत) मा बाप तो बड़े आदमीके घर बेटीका ब्याहकर निश्चिन्त होगये। वह समझते होगे कि बेटी बड़े सुखमें होगी पर बेटी कैसे सुखमे है यह बेटी ही जानती है। वह तो अपना कर्त्तव्य पालन कर चुके। अब जो कुछ मेरे भाग्यमें है वह मेरे सिवा कौन भोगेगा। जिस दिनसे इस घरमें आयी उसी दिनसे वैधव्य दुःख भोग रही हूं। पतिके रहते विधवा बनी हूं। जब मेरा ब्याह हुआ तब मेरी उम्र ग्यारह की थी और उनकी छः की। मैं स्यानी हुई तो वह नन्हें नादान थे। जब वह ज्वान

हुए तब मेरी ज्वानी जाती रही। दिल खोलकर एक रोज भी बात चीत न हुई। पहले वह मेरे पास आनेमें लजाते और डरते थे पर अब घृणा करते हैं। हाय मेरी उम्र यों ही बीत गयी। इसमें उनका ही क्या दोष है। माता पिता सोच समझकर ब्याह करें तो ऐसा क्यों हो। घरघरमें यही लीला है। हाय इतने पर भी लोगोंकी आखें नहीं खुलतीं। जिसे देखो वही बड़े आदमियोंसे सम्बन्ध करनेके लिये मुंह बाये बैठा है। (आं पोंछती है) मैं क्या करूं कुछ समझमे नहीं आता। इधर पन्द्रह रोजसे बिलकुल ही नहीं आये। रोटी खायी और भागे। हा भगवान! मैंने ऐसा कौनसा पाप किया जिससे पति रहते बाल विधवा बन गयी! (द्वारकी ओर देख) बड़े भाग जो आज इधर आरहे हैं।

(वसन्त आता है)

वस—(रुखाईसे) सोचनेकी बात है मुझे क्यों बुलाया था?

श्याम—मांजीने कहा था कि—

वस—(बिगड़कर) यह ढकोसला मुझे अच्छा नहीं लगता। जैसी तू वैसी मांजी। नाहक मेरा समय नष्ट किया। सोचनेकी बात है।

श्यामा—नाथ!

वस—नाथ बैलकी नाकमें यहां कहां, सोचनेकी बात है। कहना हो सो जल्द कह।

श्यामा—क्या कहूं कुछ—

वस—(कड़ककर) कुछ मत कह । ले, मैं जाता हूं ।

(जाना चाहता है)

श्यामा—हाथ जोड़ती हूं जरा ठहर जाइये ।

वस—मुझे बाहर जाना है ।

श्यामा—जाना है तो जाइये मैं रोकती नहीं पर इस दासीका क्या अपराध है जो—

वस (डपटकर) सोचनेकी वात है । फिर वही पुरानी वाते । मैंने एक वार नहीं सौ वार कह दिया कि यह सब मैं कुछ नहीं सुना चाहता । खर्च बर्चकी जरूरत हो तो दुकानसे मंगवाले ।

श्यामा—मै खर्च वर्च नही केवल तुम्हारी पदरज चाहती हूं ।

वस—बस बस रहने दे अपनी चालाकी । अब मैं नहीं ठहर सकता । सोचनेकी बात है । (जाना चाहता है)

श्यामा—(चरण पकडती है) प्राणेश्वर मुझे यो न त्यागिये—

वस—सोचने की बात है । (लात मारकर जाता है)

(श्यामा गिरती और रोती है ।)



नवां दृश्य ।



विवाह मण्डप ।

(बुद्धूमल वर वेषमें, एक बालिका वधू वेषमें, हीरा मोतीलाल आदि यथास्थान बैठे हैं। भूरालाल विवाहका जन करता है । बाजे बजते हैं । स्त्रियां गाती हैं)

गीत ।

"तूं क्युं ए चूरी डगमगियो तेरा आला गीला बांस
रतनावर चूरी चढ्यो ए ।
चूरी श्रीराम चढ्या बाई सीता ए थारो कंथ
पून्यूको चांद रतनावर चूरी चढ्यो ए ।
चूरी महादेव चढ्या बाई पारवती ए थारो कंथ
पून्यूको चांद रतनावर चूरी चढ्यो ए ।
चूरी बनड़ो चढ्यो बाई बनड़ी ए थारो कंथ
पून्यूको चांद रतनावर चूरी चढ्यो ए॥"

(रोअक्कड़ और हंसक्कड़ आते हैं)

रो—(बड़े जोरसे रोकर)

हंसना भला या रोना पंचों हमको तुरत बताओ ।
गंगा तुलसी तामा लेकर सच्चा राग सुनाओ ।

बुद्धू—निकालो निकालो। सुभ समयमे रोने आया है।

भूरा—चेटीके काढ़ने निकालो। भले काममे विघन डालने आया है। (रोअक्कड़को लोग धक्के देकर निकालते है)

हंसक्कड़—क्यों मेरी जीत हुई न?

रो—नहीं। यहां तेरी भी वही दशा होगी।

हंस—कभी नहीं।

रो—तो तू भी देख ले।

हंस—अच्छी बात है। अभी चल, फिर लौटकर आता हूं

(दोनो जाते हैं)

बुद्धू—भूरालाल जी, अब फेरेमे कितनी देर है।

भूरा—कुछ नहीं। गणेश पूजन करके बस फेराही फेरा है। (मंत्र पढ़ता हैं)

"गण नात्वा गणपते गुंगवा महेस स्वाहा।
बीकानेरा सांगानेरा गढअजमेरा गडबडगु स्वाहा॥"

(पाच सात स्वयसेवक शंख वजाते आते और बुद्धूमलको अलगकर एक नवयुवकके साथ दुलहनका फेरा करा देते है)

बुद्धू—यह क्या अन्धेर है। अङ्गरेजी राजमे यह जुलम। अरे पुलिसको बुलाओ।

भूरा—पुलिस, पुलिस। बड़ी जबरदस्ती है। बना बनाया खेल बिगड़ गया।

सब—पुलिस, पुलिस, पहरावाला, पहरावाला।

भोला—चुप, जरा भी चिल्लाये तो बस हां (लट्ठतानता है)

(हंसक्कड और रोअक्कड़ आते हैं।)

हंस—मै कहता हूं हंसना अच्छा यह कहता है रोना।

अब बोलो तुम पंचो जल्दी हंसना या अब रोना॥

बुद्धू—(उछलकर हंसक्कड़की गर्दन पकड़ता है।) इसी सालेने बना बनाया काम बिगाड़ा और अब पूछता है हंसना या रोना। उल्लू, अब हंसना कहां अबतो रोना है।

भोला—सचमुच अब तुम्हारे लिये रोना ही है क्योंकि तुम इस बालिकाका जीवन नष्ट करना चाहते थे सो न कर सके इसका विवाह इस सत्पात्र वैश्य कुमारसे हो गया। इसलिये हम लोग तो हंसते जाते हैं। तुम अब बैठकर रोओ।

[सब लोग हंसक्कड़को मारते और भोलानाथ तथा स्वयंसेवक दुलहनको लेजाते है]

परदा गिरता है।

द्वितीय अंक समाप्त।





पहला दृश्य।

गंगा तट।

(विन्दा गाती हुई आती है)

(विहाग, तिताला)

सजन तोहि ढूंढूं देस विदेस।
मनको वेग मनहिंमें रोकूं चाहे बढ़त कलेस॥
इन नैननमे मूरत तेरी पीतम वसति हमेस।
छन छन होत मिटत कितने हू भावनको आवेस॥
सुधि आवत केती वातनकी जिनको अव नहि लेस।
अव पाऊं तो प्रान करू मैं तव चरननमे सेस॥

(स्वगत) हाय मेरा जन्म यो ही गया। न इधर की रही न उधरकी। न मैं सधवा हूं न विधवा। न सुसराल में हूं न नैहरमे। न घरमे हूं न जंगलमे। न जोगिन हूं न भोगिन। मेरी गिनती किसीमें नहीं। व्याह हुआ पर पतिके दर्शन आजतक

न मिले। वह संसारमें हैं या नहीं यह भी नहीं जनती। जाननेका कोई उपाय भी नहीं है। अवतक भाईके यहां किसी तरह दिन काटती थी पर भगवानको वह भी न भाया। इसमे भगवानका क्या दोष! यह तो अपने भाग्यका दोष है। जैसा कर्म्म किया वैसा फल पाती हूं। आफतपर आफत झेलती सेवा-समिति तक पहुंची। समझी थी जीवनके शेष दिन यहीं विता ऊंगी और अपना पापी मुख किसीको न दिखाऊंगी पर भडे भाग्यने यहां भी साथ न छोड़ा। मनको जितना समझाती हू वह उतना ही चंचल होता जाता है। जिस दिनसे सेवा समितिके नायकजीको देखा उसी दिनसे मनका अजब हाल है। पहले ऐसा कभी नही होता था। आपही आप मन जाने क्यों उधर खिंचता है। ऐसी दशामें यहांसे चल देना ही अच्छा है। जाने किस दिन यह मन क्या कर बैठे। मन वड़ा चंचल है। इसे वशमें करना वड़ा कठिन है। इतने दिनकी बनी बनायी बात मिट्टीसे मिल जायगी। पर जाऊं कहां? ठिकाना कहां है? ठिकाना अब जगज्जननी जान्हवीके अतुल जलमें है। इससे बढ़कर निरापद स्थान और कहां मिलेगा। माता भगवती भागीरथी तेरी शरण। आश्रय दे।

(गंगाजीमे कूद पड़ती है)

(दौड़ता हांफता भोलानाथ आता है)

भोला—अनर्थ हो गया—नाहक इसकी जान गयी! यह कौन है?—क्यों प्राण देती है? इसे बचाना चाहिये।

(सीटी बजाता है, स्वंसेवक आते है, भोलानाथ गगांजीमें कूदता और बिन्दाको मूर्च्छित अवस्थामे निकाल लाता है)

१ ला—यह तो स्वंसेविकाजी हैं।

२ रा—हां वही तो हैं। यह क्यों डूबती थी ?

भोला—कारण पीछे पूछना। पहले इनके प्राण बचाओ। कहींसे जल्दी गर्म दूध लाओ।

स्वं—जो आज्ञा (जाता है)।

[भोलानाथ बिन्दाको होश कराता है]

दूसरा दृश्य।



भोलानाथका कमरा।

भोलानाथ।

भोला—(स्वगत) आज मनकी बड़ी विचित्र दशा है। किसी काममें जी नही लगता। जिस घड़ीसे स्वयंसेविकाको गंगाजीसे निकाला है चित्तकी चंचलता बढ़ती ही जाती है। पहले कभी ऐसा नहीं हुआ था। जब उसके पास रहता हूं एक अनिर्वचनीय आनन्द अनुभव करता हूं। अलग होते ही चित्त

उदास हो जाता है। पहले उससे मजेमे बोलता था पर अब बोलनेमे संकोच होता है। अहा कैसा सौन्दर्य्य है! मुख कैसा शान्त और प्रभापूर्ण है। हैं! आज मुझे क्या होगया है। मैं यह सब क्यो सोचता हूं। राम! राम! बड़ा अपराध हुआ, परस्त्रीका चिन्तन! मैं सेवक हूं। सेवा करना मेरा धर्म्म है। जो हो उसके प्राण बच गये यह आनन्दकी बात है। उसका मुख सुन्दर पर प्रसन्न नहीं है। सदा चिन्तित रहती है। मालूम होता है, उसके चित्तको कोई गहरी चोट लगी है। फिर वही बात। मुझे उससे मतलब। जिससे मतलब था उसे ही छोड़ आया तो फिर इसकी चर्चा क्यों? माता पिताने मेरी इच्छाके विरुद्ध मेरा ब्याह एक निरीह बालिकासे कर दिया। बस मैं नाराज हो ब्याहके बाद ही निकल भागा और घूमता फिरता यहां आ पहुचा। भला उस बिचारीका क्या दोष था जो मैं उसे छोड़ आया। अगर दोष है तो उसके मां बापका और मेरे मांबापका जिन्होंने बिना समझे बूझे ब्याह कर दिया बापके कसूर-पर मैंने बेटीको सजा दी। मैंने यह बड़ा अपराध किया। अब इस पापका प्रायश्चित होना चाहिये। वह कहा है, किस अव-स्थामें है कुछ मालूम नहीं। अब उसे कहां पाऊं? कैसे लाऊं? अगर वह आ जाय और हम दोनो मिल कर सेवा-धर्म्मका पालन करे तो सोनेमे सुगन्ध हो जाय।

क्या ऐसा शुभ दिन भी—

[एक स्वयंसेवक आता है]

स्वयं—महाराज, टेलीफोन।

भोला—(चौंककर) क्यों? क्या है?

स्वयं—टेलीफोनमें कोई बुलाता है।

भोला—क्यों? क्या हुआ?

स्वयं—मालूम नहीं। वह आपसे ही बात करना चाहती है।

भोला—अच्छा, चलता हूं।

(दोनों जाते हैं)

तीसरा दृश्य।

वसन्तकी बैठक।

[कवि और दर्शकगण यथास्थान बैठे हैं। वसन्त और भोलानाथ आते और अपने अपने स्थानपर बैठते है। तालिया पिटती है।]

भोला—(खड़े हो) हिन्दी भाषाके कविकुंजरो, यह कवि-सम्मेलन हमारे दानवीर सेठ वसन्तकुमारजीकी उदारताका फल है। आप बड़े हिन्दी हितैषी और काव्यानुरागी हैं। आप प्रति वर्ष कविताके नामपर ११) ग्यारहकी रकम खर्च कर डालते हैं। अबके भी आपने हिन्दीकी उत्तम कवितापर ग्यारहका पुरस्कार देनेका संकल्प किया है। आपलोग अपनी अपनी कविता सुनाकर इनाम ले लीजिये। सेठजीने आप लोगोंके

सुवीतेके लिये समस्या या विषयका बन्धन नहीं रखा है। भाषा या छन्दकी भी कोई कैद नहीं है। सिर्फ बात अनूठी और नयी होनी चाहिये। इसके विचारक भी आपही लोग हैं। जिसकी कविताको आपलोग उत्तम बतावेंगे उसे ही यह पुरस्कार फौरनसे पेश्तर देदिया जायगा। (हर्षध्वनि। वैठता है।)

वस—(खड़ेहो) सोचनेकी बात है। अब देर न कर कार्य्यारम्भ कर दीजिये। मैं आप लोगोंकी कविता सुननेके लिये बड़ा उत्सुक हो रहा हूं। (हर्ष ध्वनि)

१ ला कवि—अच्छा मैं ही श्रीगणेश करता हूं। सुनिये -

(कवित्त)

फूले हैं पलास आस, पासमें वतास जानि,
घासकी उंचाई अव, गयी आसमान पै।
सरसोंकी पीली डाली, रुपमें सजीली देख,
कोयल अब कूकें है, मोरनकी सान पै।
सुबौरे हैं आम धाम, धाम पै दिखाई देत,
घामकी कड़ाई मानो, चढ़ी है मचान पै।
देख देख सोभाको, कविजी यो वरनत हैं,
वसन्तकी वहादुरी, वगरी वितान पै।

दर्शक— वाह वाह।

२ रा कवि—(मुंह वनाकर) यहतो व्रजभाषा है। इसमें

अब जान कहा! यह तो मुर्दा है। शब्दोंकी सूरत तो देखिये कैसी बिगड़ी हुई है। इसके सिवा इसमे वही पुराना चर्वित चर्वण है। नयापन या अनूठापन कुछ भी नही। अब मेरी जीती जागती खड़ी बोलीकी कविता सुनिये और देखिये इसमें नवीन काव्यरस कैसा लबालब भरा हुआ है—

दोहा।

मार खटाखट खट्ट पी, रोज गटागट गट्ट।
टट्ट बनाकर जट्टका, आया भोंदू भट्ट॥

घनाक्षरी।

भगत भकोसू भांत, भांतकी बनाता बात,
बातको चलाता सब, भ्रान्त मतवालेकी।
लटूठको उठाता जब, खड्डमे गिरा है आज,
हाथ पैर शुष्क हुए, ठंढक है पालेकी।
भयकी न भीत भली, शीतकी न रीत रुकै,
तीतको निचोड़कर, भीत घरवालेकी।
बार बार कहते है, सुनलो सलोने यार,
भागो मत जागो अब, करनी है कालेकी॥

श्रोता—वाह—वाह—एक और।
२ रा कवि—अच्छा सुनिये।

दोहा।

मट्टी ले पट्टी लिखी, टट्टीकी हो ओट।
खट्टी तबियत जब हुई, पहुंची चट्टी चोट॥

घनाक्षरी।

भोले मतवाले काले, प्यालेपर प्याले ढाले,
देखो आज आये यहां, कैसी भीड़ भारी है।
बेचेंगे दवाई और, खावेंगे मलाई खूब,
करेंगे बुराई फेर, पीकर जल खारी है।
मारेंगे खटाखट औ. पीएंगे गटागट तो,
सफाचट सफाया हो, दुनियां विचारी है।
करके विचार गूढ़, मूढ़ सब बोल उठे,
धन्य धन्य वाह वाह, कविता हमारी है।

दर्शक—वाह—खूब कहा। आखिर तो पुरानी हड्डी है।

२ रा कवि—यह खड़ी बोली होनेपर भी कर्णकटु है। जरा भी मधुरता नहीं। इसमें गंवारपन ठूंस ठूंसकर भरा हुआ है। नवीनताका नाम तक नहीं। इस लिये यह पुरस्कारके अधिकारी नहीं। अब मेरी कोमल कान्त पदावली सुनिये—

हम क्या कहें औ क्या सुनें यह बात सारी सोचिये।
मिलता नहीं कुरता अभी तो कोटको ही नोचिये॥

निज लोचनोंको बन्द करके पारितोषिक दीजिये ।
फिर बोलिये कवितासुधाको खोलिये रस पीजिये ॥

दर्शक—वाह वाह—खड़ी बोलीकी कलम तोड़ डाली।

४ था कवि—इसमे भी नवीनता नहीं है। वही पुरानी तुकबन्दी है। तुक मिलानेसे कविताका सारा सौन्दर्य नष्ट हो जाता है। अब जरा मेरी बेतुकी सुनिये और दाद दीजिये। इनाम चाहे मत दीजिये पर वाह वाह तो जरूर कीजिये—

पदच्युता किन्तु मुखोज्ज्वला थी
नितान्त गुर्वी धरिणी धरित्री।
अभिज्ञता विज्ञ मनोज्ञमाना
ललिता ललामा सकला जगत्सु ॥

दर्शक—धन्य! धन्य! वाल्मीकको भी बं बुला दिया।

५ वां कवि—यह लकड़तोड़ बेतुकी है। इसमें रस कहां? अब जरा मेरी कोमल, रसीली बेतुकीका मुलाहजा कीजिये—

विदा हुई है रितु बरसाती।
आया है अब समय सरद का ॥
प्रकृतिने पहना उजला कपड़ा।
श्वेत हुई है पृथ्वी सारी ॥
सुन्दर फूले कास कपासा।
नादियोंमे जल बहता निर्मल ॥

दर्शक—कमाल किया! वाह! क्या कहने हैं!

५ वां कवि—अबतक जितनी कविताएं सुननेमे आयीं सबमें जनानपन भरा हुआ है। नवीनता, सुन्दरता, वीरता, धीरताकी गन्ध भी किसीमे नहीं। वह कविता ही क्या जिसमे वीरत्व न हो। अब मेरी वीरवाणी सुन लीजिये। यह वीर रसमें भूषणका भी दूषण करती है। पारितोपिक पानेका पूरा अधिकारी यदि कोई है तो मैं हू। जरा ध्यानसे सुनिये—

तोपोंने किया धम ।
भांझोंने किया झम ॥
बिछुओंने किया चप ।
बरछोंने किया खप ॥
लालाने किया धू ।
लौंड़ोंने कहा थू ॥

दर्शक—वाह वाह। खूब थू किया। आपने कलम ही नहीं तोड़ी बल्कि दावात भी फोड़ डाली। इनाम इस थू पर ही मिलना चाहिये।

कविगण—कभी नहीं। मुझे मिलना चाहिये, मेरी अच्छी है।

बस—सोचनेकी बात है। आप जिसे बतावें उसे दूं।

कविगण—मुझे दीजिये मुझे।

(हंसक्कड़ रोअक्कड़ आते है)

हंस—मैं कहता हूं हंसना अच्छा यह कहता है रोना ।
अब बोलो तुम कवियो जल्दी हंसना या अब रोना ॥

रो—हंसना भला या रोना कवियों हमको तुरत बताओ ।
तुकबन्दीकी कसम तुम्हे है सच्ची राय सुनाओ ॥

(दोनो हंसते रोते है)

वसन्त—सोचनेकी बात है—

(कविगण वसन्तको घेरकर खड़े हो जाते है । कोई हाथ खेचता है, कोई पैर । सबही इनाम इनाम लाइये चिल्लाते है । भोलानाथ लाइये, वसन्तको बचाता है)

चौथा दृश्य ।

शेअर मारकेट ।

(हीरालाल, वसन्तलाल,)

हीरा—जयगोपाल साव ।

वस—जयगोपाल ।

हीरा—खूब मिले। मैं तो आपके यहां जानेवाला था परसों छोरीको व्याह है। फेरांके समय आप जरूर पधारियो

वस—(स्वगत) परसों तो वगीचें जा देवीदयालकी लुगाईको ठोक करना है। (प्रकट) सोचनेकी वात है। एसोशियेशनकी मीटिंग है। मैं शायद न पहुंच सकूंगा। क्षमा करना। (जाता है)

हीरा—(स्वगत) कलके कमरहट्टीके सौदेमे तो वड़ा घाटा है। मैंने लिया था ६४५) मे और वाजार वन्द हुआ तव ६००) का भाव था। इस सौदेको किसी तरह केनसल कर दूं तो जान वचे। भगवान मालिक है।

(मोतीलाल आता है)

मोती—(स्वगत) कल कमरहट्टी ६४५) में वेचा था। चलूं उसे सिटल कर लूं। न मालूम पीछे क्या हो। भावरूप भगवान हैं। आज इसमे पूरा नफा मिल जाय तो कल्ह सनीचरको वगीचेमे गोठ हो। सुना है वह अच्छी गानेवाली है और नयी आयी है।

(हीरालालको देखकर)

हीरालालजी जयगोपाल। कहो कमरहट्टीका क्या भाव खुला।

हीरा—जयगोपाल। मैं तो अभी तुरत आया हूं। मालूम नहीं। सुना कल शामको ६००) का भाव था।

मोती—मैंने तो ८६०) सुना है। क्या कलवाला सौदा सिटल करोगे?

हीरा—कौन सौदा ?

मोती—वही ६४५) में जो २५ सेर तुमने लिये थे।

हीरा—मैंने लिये थे या बेचे थे ?

मोती—नही भाई तुमने बेचे और मैंने लिये थे।

हीरा—ऐसा नहीं हो सकता।

मोती—क्यो नहीं हो सकता। मेरी पाकटबुकमे तो लिखा है। (पाकटबुक खोलकर) यह देखो २५ सेर कमरहट्टी दर ६४५) में हीरालाल हाथ बेचे।

हीरा—इससे क्या हुआ ? तुम्हारी पाकटबुक है चाहे जो लिख लो।

मोती—तो क्या मैंने झूठ लिख लिया है ?

(नेपथ्यसे)

१ला—हम कमरहट्टी ६००) मे लेता है।

२रा—६१०) में बेचता है बोलो क्लोच।

हीरा—मै यह नहीं कहता पर शायद भूल हो गयी हो।

मोती—सब काममें लपटा लगाना अच्छा नहीं। अपनी पाकटबुक दिखाओ उसमे मेरे सामने तुमने लिखा हैं।

हीरा—(स्वगत) पाकटबुक कैसे दिखाऊं। दिखानेसे तो ठबका ही हो जायगा।

मोती—सोचते क्या हो ? पाकटबुक निकालो।

हीरा—निकालता हूं, जल्दी क्या है? (जेबमें हाथ डालता है)

(नेपथ्यसे)

१ ला—अच्छा ६१०) में २५सेर क्लोच।

२ रा—क्लोच।

३ रा—६१५) में बेचा २५ शेयर।

१ ला—लिया। और लाओ।

हीरा—(जेबसे पाकटबुक निकालकर) (स्वगत) जरा और ठहर जाऊं तो दिखाऊं। बाजारका रुख तेज मालूम होता है।

मोती—दिखाते क्यों नहीं सोचते क्या हो?

(नेपथ्यसे)

बंगाली—कमरहट्टी बेचता ६१०) में कोई मोलेगा?

पारसी—हम ६०५) बेचता है।

हीरा—(स्वगत) अरे भाव फिर मन्दा हुआ। पाकटबुक न दिखाना ही अच्छा है। (प्रकट) यह पाकटबुक दूसरी है। वह तो घरपर ही छूट गयी।

मोती—लाओ देखूं। वही है।

हीरा—बड़े देखनेवाले। जाओ नहीं दिखाऊंगा।

मोती—क्यों नहीं दिखाओगे। दिखाना होगा। सौदा करके नटता है। बेईमान।

हीरा—खबरदार जो गालियां दीं।

मोती—गाली ही क्यों जूता मारूंगा।

हीरा—तेरे बापने भी मारा है या तू ही मारेगा।

मोती—धन्नासेठका नाती बनता है तो दिखा पाकटबुक। साला नटता है और आंखें भी दिखाता है। (थप्पड़ मारता और पाकटबुक छीनता है)

हीरा—पुलिस ! पुलिस !! लूट ! लूट !!

(हाथापाई होती है और भीड़ हो जाती है)

सब—हैं हैं, बस बस—जाने दो, जाने दो ।

(सरजंट और कौन्सटेबल आते हैं)

(कुछ भागते है, कुछको कान्स्टेबल पकड़ते हैं)

सर—क्या गोलमाल करटा है ?

हीरा—हमको मारा और लूट लिया ।

मोती—साहब यह सौदा करके नटता है ।

और लोग—हम रास्तामें जाता था साहब ।

सरजंट—कुछ परवा नेही ठाना चलो ।

सब—नहीं साहब, माफ करो (पाकेटमें नोट देते हैं)

(कान्स्टेबल एक एक कर औरोंको छोडते है । हीरा और मोतीको थाने ले चलते है)

(हंसक्कड़ और रोअक्कड़ आते और वह भी पकड़े जाते है)

रो—(रोकर) मुझे क्यों पकड़ते हो ? मै तो खुद तुम्हारे पास आया हूं । मेरी बात जरा ध्यानसे सुनो ।

सर—ठानेमे सुनेगा ।

रो—नही यहीं सुनो—

हंसना भला या रोना साहब हमको तुरत बताओ,
चूम चूमकर बाइबल हमको अपनी राय सुनाओ ।

हंस—मै कहता हूं हंसना अच्छा यह कहता है रोना।

बोलो बोलो जल्दी साहव हंसना या अव रोना

सर—क्या बोला?

रो—साहव कबीरजी भी कह गये हैं—

कबीरा हंसना दूरकर रोनेसे कर प्रीत।

विन रोये किन पाइयां प्रेम पियारा मीत॥

हंस—कुछ वसन्तकी भी खबर है या यों ही काता और ले दौड़ी—सुन

जग सुख जो हैं चाहते सुन लें मंत्र नवीन।

पराधीन रोते सदा हंसते हैं स्वाधीन॥

रो—परन्तु

रोकर आया जगतमे, रोना ही वस काम।

हठकर हरगिज मत हसै, हंसना जान हराम॥

हंस—अरे सुन—

जन्मा था तव मातुका, दूध पिया तत्काल।

अव खाता है क्यों वता, चावल फलका दाल॥

सर—हम नहीं समजटा टुम क्या वोलटा। ठाना चलो।

(सव जाते हैं)

पांचवां दृश्य।



मोतीलालका घर मंडप।

(बालक वर आराम कुर्सीपर लेटा है, युवती कन्या, गुलाबदेई, स्त्रियां, पडित और शिष्यगण जमीनमे बैठे हैं

गुला—(चुपकेसे) पिंडतजी, अब तुम्हारा ही भरोसा है। इसका बाप तो लोभसे पड़ इसका गला काटनेको तैयार है।

पंडित—बस चुपचाप बैठी तमाशा देखती रहो। देखो परमात्मा क्या करता है। घबराना मत। नहीं तो बना बनाया खेल बिगड़ जायगा। जो कहा है वही करना।

गुला—बहुत अच्छा। देखो वह आ रहे हैं।

पण्डित—आने दो। मैं भी अपने कृत्यमे लगता हूं।

(मोतीलाल आता है)

मोती—पिंडतजी लगनमे अब क्या देर-दार है?

पंडित—कुछ नहीं। आप आये और लग्न आयी। होमादि तो मैं कर चुका हूं।

मोती—(गुलाबदेईसे) अपने पुराने पिंडतजी नहीं आये?

गुला—वह बीमार हैं। यह मेरे बापके यहांके पिंडत हैं। संयोगसे आ गये हैं।

मोती—अच्छी बात है। पिंडतजी, बड़े भाग्यसे मनके लायक घर वर मिलते हैं।

पंडित—इसमें क्या सन्देह है धर्म्मावतार। वर तो मिल भी सकता है पर वर मिलना कठिन है। वर छोटा हुआ तो क्या घर तो वड़ा है।

मोती—पर औरते तो यह नहीं समझतीं।

पंडित—अगर समझतीं तो मैं ही क्यों पंडित बनता। (वर कन्याके बीच एक शिष्य बैठना है।)

मोती—पिंडतजी बींद (वर) के पास वह कौन बैठ गया?

पंडित—वह मेरा विद्यार्थी और बींद (वर) का प्रतिनिधि है। बींद बुखार आ जानेसे कमजोर हो गया है। अभी उससे ज्यादा मिहनत नहीं हो सकती। उसके वदले यह प्रतिनिधि ही सब काम करेगा।

मोती—यह आपने अच्छी सोची।

पंडित—अच्छी बुरी तो राम जाने पर अभी काममें सुवीता जरूर होगया है। अच्छा, आप कन्यादान कर दें। और कृत्य पीछे कर लूंगा।

मोती—अच्छी बात है।

पंडित—हाथमें कुश, जल लीजिये और बोलिये—

ॐ अद्य गर्गगोत्राय मोहनलालगुप्ताय श्रीधररूपिणे वराय वात्सल्यगोत्रोत्पन्नां गंगानाम्नी श्रीरूपिणी यथाशक्त्यलंकृना-मुपकल्पितोपस्कारसहितामिमां कन्यां प्रजापतिदैवत्यां स्वर्गकाम-पत्नीत्वेन तुभ्यमहं संप्रददे।

कुश मल सहित कन्याका दक्षिण हस्त वरके यानी प्रतिनिधिके दक्षिण हस्तपर रख दीजिये।

(मोतीलाल कन्याका दाया हाथ प्रतिनिधिके दाये हाथपर रखता है)

पंडित—अब फेरा भी हो जाय।

मोती—बहुत अच्छा।

(विद्यार्थीके साथ कन्याका फेरा होता है)

पंडित—ओम् एकमिषे विष्णुस्त्वा नयतु। ओं द्वे ऊर्जे विष्णुस्त्वा नयतु। ओ त्रीणि रायस्पोषाय विष्णुस्त्वा नयतु। ओं चत्वारि मायोभवाय विष्णुस्त्वा नयतु। ओं पञ्च पशुभ्यो विष्णुस्त्वा नयतु। ओ षड्तुभ्यो विष्णुस्त्वा नयतु। ओं सखे सप्तपदा भव सा मामनुव्रता भव विष्णुस्त्वा नयतु।

मोती—फेरा भी इसीके साथ?

पंडित—इसके साथ नहीं तो किसके साथ? जिसे आपने कन्यादान किया उसीके साथ तो हुआ।

मोती—यह क्या?

पंडित—यह आपके लोभका दण्ड है।

मोती—कैसे?

पंडित—ऐसे।

(पंडित और स्त्रियां भोलानाथ और स्वयसेवक बन जाते हैं)

गुलाब—आपने मेरी लड़कीकी रक्षाकर बड़ा उपकार किया!

भोला—मैंने उपकार क्या किया अपना कर्तव्य पालन किया

है। तुमने टेलीफोन किया और सहायता मांगी। मुझसे भी जो बना किया। यह मेरा विद्यार्थी नहीं वैश्य है और सत्पात्र है। सेवासमितिका उत्साही और कर्तव्यपरायण सदस्य है। मेरा आशीर्वाद है कि यह जोड़ी फूले फले।

मोती—यह जोड़ी तो पीछे फूले फलेगी। पहले आप दोनों तो फूल फल लीजिये। (गुलाबदेईसे) क्योंरी रांड़ लुच्ची यह तूने क्या किया।

गुलाब—किया क्या अपनी बेटीकी जिन्दगी बचायी। तुम तो थैलीके लालचमें पड़ इसका गला काट ही चुके थे। एक तो नन्हा बालक उसपर छः महीनेका बीमार।

मोती—बीमार है तो चङ्गा हो जाता। छोटा है तो बड़ा हो जायगा। हरामजादी तूने मेरा मनसूबा धूलमें मिला दिया। जी चाहता है कि तुझे जीती चबा जाऊं। (मारना चाहता है)

भोला—खबरदार जो हाथ उठाया। स्त्रियोंपर हाथ छोड़ना पाप है।

मोती—चुप। तू क्यों बोलता है। निकल जा यहांसे।

भोला—अच्छा निकलता हूं। (मोतीलालका हाथ पैर बांधता है।)

मोती—अच्छा मैं पुलिसमें जाता हूं।

भोला—तुमसे पहले मैं ही जाता हूं। बोलो सनातनधर्मकी जय!

स्त्रयं—सनातनधर्मकी जय! (वर वधूसहित सब जाते हैं)

वर—म्हारी गुड्डो तो देता जाओ।

छठा दृश्य।



बागका कमरा

[लक्ष्मी चिन्तित बैठी है]

लक्ष्मी—(स्वगत) जाने मेरे भागमें क्या लिखा है। नित नयी नयी विपदाएं भोग रही हूं। रुकमिन रांडकी बातोंमें आ उस दिन न घरसे निकलती न इस फन्देमे फंसती। सब कुछ गया। एक धर्म्म बाकी है। अब वह भी जाना चाहता है। हाय इसे कैसे बचाऊं! यहां कोई मददेनेवाला भी नही। बैजनाथका कहना न माना उसका फल हाथोंहाथ मिल गया। (रोती है) घर तीन तेरह हो गया। गांववाले न जाने क्या सोचते और कहते होंगे। बीबीजी कहां किस दशामें होंगी इसकी भी खबर नही। लड़केको देखे भी बहुत दिन हो गये। हाय बड़े संकटमे पड़ गयी। अपनी मूरखतापर अफसोस होता है। क्यो उस रांड लुच्चीकी बातोमे आ गयी! उस दुष्टके आनेका समय हुआ ही चाहता है। भगवान! अब लाज तेरे हाथ है। मुझे तो चारों ओर अंधेराही दिखायी देता है। नाथ, अबलाकी रक्षा करना (कान लगाकर) आ गया—पापी चंडाल आ गया। अब कुशल नही है। (घबरानीसी इधर उधर घूमती है)

(बसन्तकुमार आता है)

वसन्त (स्वगत) सोचनेकी बात है। बस मार लिया है। आज मेरी प्रतिज्ञा पूर्ण हुई। आज मेरे यज्ञकी पूर्णाहुति है। दरिद्र होकर इतना गर्व—इतनी शेखी सोचनेकी बात है! आज देवीदयालका सारा घमण्ड चूर चूर हो गया। संसार आंखे खोलकर देखे, बड़े आदमियोंसे बढ़कर बोलनेका क्या फल है! देवीदयाल, तू बड़ा बेवकूफ है! अगर मेरी बात मान लेता तो आज तेरी यह दुर्दशा न होती। देख तूने फल पाया या मैंने? तू कहां मुंह छिपाकर बैठा है, मालूम नहीं। तेरी बहनको मैंने खाने खराब किया। आज तेरी स्त्री भी मेरे पंजेमें है (लक्ष्मीकी ओर देखकर) अहा क्या रूप है! मैं बहुत चाहता हूं कि इसपर अत्याचार करूं पर इसकी भोली भाली सूरत ऐसा करनेसे रोकती है। पर आज मैं न मानूंगा। चाहे जैसे हो अपनी कामना अवश्य पूरी करूंगा। (प्रकट) प्यारी, सोचनेकी बात है। अब तो मुझ दासपर कृपा करो। बहुत दिन तरसा चुकी।

लक्ष्मी—मुझ अबलापर दयाकर। अब मत सता। हाथ जोड़ती हूं।

वसन्त—मैं पांव पड़ता हूं जिद्द छोड़ दो। जो तुम कहोगी मैं करूंगा। मुझे अपना गुलाम समझो।

लक्ष्मी—फिर वही बात। क्या तुझे जराभी लाज शर्म नही जो तू मुझसे ऐसी बाते करता है। मैं तुझे अपना भाई समझती हूं।

वसन्त—मैं भी तो बहन समझकर ही तुझे यहां लाया हूं।

सोचनेकी बात है। यह चोचले रहने दे और आ गलेसे लिपट जा। जो मांगेगी वही दूंगा। (आगे बढ़ता है)

लक्ष्मी—(कड़ककर) खबरदार जो आगे पैर बढ़ाया। पापी, नीच, चंडाल!

वसन्त—(रुककर) सोचनेकी बात है, तू यहां क्या कर सकती है। यहां मेरे तेरे सिवा और कोई नहीं जो तेरी मदद करेगा। (आगे बढ़ता है)

लक्ष्मी—(डपटकर) मेरी मदद भगवान करेगा। वही अनाथोंका नाथ मेरी लाज रखेगा। खबरदार! जो एक डग भी आगे बढ़ा तो मैं जान दे दूंगी।

वसन्त—मैं इस बन्दरघुड़कीमें आनेवाला नहीं। यहां रोजका यही काम है। मुझसे बचकर तू नहीं जा सकती। जान देना सहज नहीं है। देखूं तो सही तू कैसे जान देती है।

(हाथ पकडता है)

लक्ष्मी—(हाथ छुड़ाती है) छोड़—छोड़—नीच, पापी! भगवान तेरी सरन—धर्म्म जाता है—रच्छा कर—दया कर—

वसन्त—यहां कोई रच्छा करनेवाला नहीं है —

(दोनों हाथ पकड़ता है)

[हाथमें त्रिशूल लिये विन्दा दौड़कर आती है। पीछे स्वयंसेवकगण आते हैं]

विन्दा—जरूर है। सावधान!

(खोपड़ीपर त्रिशूल तान खड़ी होजाती है। वसन्त भौचक-सा वहीं ठठक जाता है। लक्ष्मी आखे बन्दकर लेती है)

विन्दा—नीच, पामर, दुरात्मा, सम्हल जा। आज तेरे पापकी नाव पूरी हो गयी। फल भोगनेके लिये तैयार हो जा। (स्वयंसेवकोंसे) बांधो इसे।

(स्वयंसेवक वसन्तको वांधते हैं)

लक्ष्मी—क्या मैं सपना देख रही हूं। (आंखें मलकर) नही मैं जागती हूं। (विन्दासे) माता तुम कौन हो ? तुमने मेरा धर्म बचाया। मैं जन्मभर तुम्हारा उपकार मानूंगी।

विन्दा—कौन ? वहू। तुम यहां कहां ?

लक्ष्मी—कौन ? वीवीजी (गलेसे लिपटती है)

(भोलानाथ आता है)

भोला—सेवासमितिके सुयोग्य सभापति महोदय, क्या यही आपका सेवाधर्म्म है ? मैं नही जानता था कि आप ऐसे रंगे स्यार हैं। धन्यवाद है स्वंयसेविकाजीको जिनकी कृपासे आपका असली रूप जल्द ही प्रकट हो गया। नहीं तो आप अभी न जाने और क्या क्या अत्याचार करते ! धिक्कार है !

वसन्त—(गर्दन नीचीकर) सोचनेकी वात है—

(देवीदयाल, मदन और वैजनाथ आते हैं)

विन्दा—(साश्चर्य्य) भैया ! तुम यहां कैसे......

मदन—बूआजी—अम्मा। (दौड़कर दोनोंसे लिपटता है)

बैज—जीजी, मेरी ही भूलसे तुम सबको इतना दुख उठाना पड़ा। मैं देवीदयालके आगे मुंह दिखाने लायक न रहा। (वसन्तसे) क्या यही तेरा सनातनधरम है ?

बिन्दा—नही नहीं बैजू। तुम्हारी कोई भूल नहीं है। तुमने तो हमारी पूरी मदद की। हम तुमसे उऋण नहीं हो सकते। तुम शूद्र होकर भी उच्च हो और यह (वसन्तकी ओर) वैश्य होकर भी अधम है। (देवीदयालसे) भैया तुम यहां कैसे पहुंचे ?

देवी—कैसे बताऊं ? तुम्हें ढूंढ़ता यहां आ पहुंचा। तू यहां कैसे आयी ?

बिन्दा—मैं पीछे बताऊंगी। पहले तुम बताओ।

देवी—मालिकका तार पाकर मैं कलकत्ते आया। वहांसे घर गया। वहां बैजनाथसे सब बातें सुनी। दैनिक 'भारत-मित्र' में यह पढ़कर कि कलकत्तेकी सेवासमितिने कई भूले भटकोका पता लगानेमें अच्छा नाम कमाया है मैं फिर कलकत्ते आया और सेवासमितिमे गया। वहां नायकजी तो नही मिले पर उपनायकजीकी बातोसे मालूम हो गया कि तू आजकल वहीं है और एक स्त्रीके उद्धारके लिये यहां आयी है। बस मैं भी स्वयंसेवकोको ले यहांतक आ पहुंचा।

बिन्दा—(भोलानाथकी ओर बताकर) आप ही सेवासमितिके नायक हैं।

देवी—(भोलानाथको सिरसे पैर तक देखकर आश्चर्यसे) क्या आप मुझे पहचानते हैं ?

भोला—नहीं। कहीं देखा तो है पर ठीक याद नहीं। आपका शुभ नाम ?

देवी—मेरा नाम देवीदयालु पांड़े, मेरे पिताका नाम हर-दयालु पांड़े, उन्नाव जिलेका रहनेवाला और ... ...

भोला—बस और रहने दीजिये। मैं पहचान गया। अब अधिक लज्जित आप न करें। मैं बड़ा अपराधी हूं। मुझे क्षमा कीजिये।

देवी—क्षमा पीछे करूंगा। पहले अपनी थाती सहेजिये। (विन्दाका हाथ भोलानाथके हाथमें देता है। विन्दा हर्ष और लज्जासे सिर नीचा कर लेती है)

भोला—आज बड़े आनन्दका दिन है। परमात्माकी परम दयासे हम बिछुड़े हुए फिर मिल रहे हैं। पांड़ेजी महाराज, अब आप भी लक्ष्मीको धारणकर लक्ष्मीधर हो जाइये।

देवी—धन्यवाद सहित आपकी आज्ञा शिरोधार्य्य है। पर अब सेठजीकी क्या खातिर हो ?

भोला—यह तो उन्हींसे पूछिये।

देवी—कहिये सेठजी साहब, अब आपका क्या सत्कार किया जाय ?

बस—सोचनेकी बात है। मैं क्या बताऊं ? जो कुछ आप उचित समझें करें।

भोला—मेरी समझसे तो सेठजीके आदर सत्कारका भार पुलिसको देना चाहिये। मैं इसका प्रबन्ध भी कर आया हूं। अब देर न कर इन्हें पुलिसके सुपुर्द कर देना चाहिये।

(श्यामा आती है)

श्यामा—नहीं, नहीं ऐसा मत कीजिये। मुझे भी पतिसेवा करनेका मौका दीजिये। मैं लक्ष्मी बहनकी रक्षाके लिये ही यहां आयी पर मेरे आनेके पहले ही यहां मधुर मिलन हो गया यह परम सन्तोषकी बात है। अब मैं अपने पतिके लिये सबसे क्षमाभिक्षा चाहती हूं।

विन्दा—धन्य ! धन्य !! मैं श्यामा बहनको सहर्ष यह भिक्षा देती हूं। मैं भी इन्हींकी कृपासे बसन्तकी कैदसे छूटी थी। इनका उपकार यादकर मैं इनके पतिको क्षमा करती हूं।

देवी—यदि ऐसी बात है तो मैं भी क्षमा करता हूं।

लक्ष्मी—मैं भी करती हूं।

भोला—सबने की तो मैं भी करता हूं।

बसन्त—सोचनेकी बात है। मैं बड़े भ्रममें था। आज मेरी आंखें खुल गयी। भारतकी महिलाओंका महत्व आज मुझे मालूम हुआ। अब मैं अपने कियेपर पछताता हूं। मैं मानता हूं कि मैं बड़ा अधम, नीच और पापी हूं। मैंने धर्म्मके नाम-पर बड़े बड़े अधर्म्म किये और जो कुछ किया अपने पापोंको छिपानेके लिये ही किया। मैं क्षमाके योग्य नहीं हूं परन्तु सोच-नेकी बात है—आप लोगोंने उदारतापूर्व्वक मुझे क्षमा कर दिया तो मैं भी अपना सर्वस्व सेवासमितिको प्रायश्चितस्वरूप समर्पितकर प्रतिज्ञा करता हूं कि शेष जीवन देश सेवामें ही बिताऊंगा।

श्यामा—मैं भी आप लोगोंको धन्यवाद दे अपने पतिका अनुसरण करती हूं।

सब—धन्य! धन्य!! बस इसीका नाम मधुर मिलन है। (गाते हैं)

यह परिवर्तनशील जगत् नित रंग नवीन बदलता है।
जो सूरज पश्चिममें छिपता पूरब वही निकलता है॥
बिछुड़े मिलते, बिगड़े बनते, अवनत उन्नत होते है।
दुख सुखका चक्कर है चलता हंसते वह जो रोते हैं॥
मंजुल 'मधुरमिलन'का स्वागत करके निज कर्त्तव्य करो।
नहीं कामना फलकी रक्खो देशप्रेमको चित्त धरो॥

यवनिका पतन।

इति शुभं।



कर्म्मयोग

ले०—बंगालके प्रसिद्ध कर्मयोगी

श्रीयुत अश्विनीकुमार दत्त

इस ग्रंथमें श्री दत्त महोदयने कर्मयोगका वर्णन बड़ी रोचक भाषामें किया है। इसमे निष्काम कर्मकी महिमा और सच्चे कर्मयोगीके लक्षण बड़े विस्तारके साथ बतलाये गये हैं। इस ग्रंथकी प्रस्तावना भी "सरलगीता"के लेखक पंडित लक्ष्मणनारायणजी गर्दे ने लिखी है जो अपने सात्विक विचारोंके लिये प्रसिद्ध हैं। 'भारतमित्र' इसके सम्बन्धमें लिखता है—

"कर्मयोगका सुन्दर विवेचन यही है। मनोरञ्जक दृष्टांत देकर बड़े ही अच्छे ढङ्गसे कर्मयोगका महत्व समझाया है। इससे 'कर्मयोग' के संसार में प्रवेश हो जाता है। बाबू अश्विनीकुमार दत्तका नाम भारतविख्यात है। उनकी यह पुस्तक भी बंगालमें सर्वत्र बड़ी श्रद्धाके साथ पढ़ी जाती है। है भी इसी योग्य।"

करीब १५० पृष्ठकी पुस्तकका मूल्य केवल ॥।)

अन्य उपयोगी पुस्तकें।

प्रसिद्ध राष्ट्रीय कवि पंडित माधव शुक्ल कृत पुस्तकें

महात्मा गांधीकी जेलयात्रा—इसमे महात्माजीकी गिरफ्तारीसे लेकर उनकी जेलयात्रा तककी घटनाओंका वर्णन है। मूल्य ॥=)

पञ्जाबकी वेदना—इसमे पञ्जाबकी दुर्घटनाओंके संबंधमें लाला लाजपतरायके विचारोंका संग्रह है। मूल्य ॥)

जागृत भारत---इस पुस्तकमें लेखकने राष्ट्रीय भावोंसे पूर्ण कविताओंका समावेश किया है। पुस्तक प्रत्येक देशप्रेमीके पढ़ने योग्य है। मूल्य ॥)

भारतगीतांजलि---इसकी कविताओंको जनताने इतना पसंद किया कि यह पुस्तकका पांचवां संस्करण है। इसकी कविताएं बड़ी मनोरंजक हैं। मूल्य ।-)

महाभारत नाटक---इसमें महाभारतकी कथाको नाटकका रूप दिया गया है। पुस्तक कैसी है इसके लिये लेखकका नामही पर्याप्त है। मू० ॥=)

सामाजिक चित्र दर्पण---इसमें सामाजिक सुधार सम्बन्धी कविताएं दी गयी हैं। सामाजिक सुधारके प्रेमियों को अवश्य पढ़नी चाहिये। मूल्य =)

जातीय ज्योति---इसमें भी कुछ चुनी हुई राष्ट्रीय कविताओंका समावेश है। मूल्य -)